बहुमूल्य वादा (नया नियम)

मत्ती 4:4 ... मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

लेकिन हमारे लिए यह कैसे सम्भव है कि जो परमेश्वर के मुँह से निकलता है, उस वचन के द्वारा हम जीवित रहें? इस वचन में यीशु के कहने का मतलब क्या था? परमेश्वर के वचन कैसे जीवन दे सकते हैं? उनके कहने का मतलब यह था कि अनन्त जीवन को प्राप्त करने की सारी आशा परमेश्वर के ऊपर निर्भर करती है--दिव्य योजना और उनके वादों पर निर्भर करती है। इन वादों के अन्दर झाँक कर हम स्पष्ट रूप से यह देख सकते हैं कि दिव्य योजना में--जो जगत की उत्पत्ति के पहले से है, वह योजना यह है कि, परमेश्वर की सारी रचनाएँ, जो उनकी समानता में बनी थी और परमेश्वर से तालमेल रखते हुए विश्वास, प्रेम और आज्ञापालन में बनी रहेगी, सभी के लिए अनन्त जीवन है। परमेश्वर के वचन इसी अनन्त जीवन के विषय से जुड़े हुए हैं, कहा जाए तो, परमेश्वर के वचनों के प्रति आज्ञापालन ही अनन्त जीवन की शर्त है। निःसन्देह मत्ती 4:4 वचन को कहते समय हमारे प्रभु के मन में यही बात रही होगी। R4896,C2,P5,6 आमीन

मत्ती 5:3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

अभी की परिस्थितियाँ वास्तव में उनके लिए विशेष मददगार हैं जो प्रभु पर अपनी निर्भरता और भरोसा बढ़ा रहे हैं। इस सम्बन्ध में हम ये देखते

हैं कि दीन लोगों को धनी लोगों की तुलना में ज्यादा लाभ है; और इस वचन में हमारे प्रभु यीशु उन लोगों को सम्बोधित कर रहे थे, जो दिन थे, जैसे कि मैदान की घाँस... क्योंकि जो मन के दिन हैं वे अपनी कमजोरी को अनुभव करते हैं और ये ही वैसे लोग हैं जो उस विश्राम और शान्ति के लिए लालसा रखते हैं, जिसे केवल प्रभु यीशु ही दे सकते हैं। मन के दिन लोग (प्रभु यीशु के) पास इस विश्राम के लिए आते हैं, ताकि वे अपने स्वामी के अनुग्रह से भरे वादे और ज्ञान की शिक्षाएं, आराम और उपदेश पाएं। R5991,C2,P3 आमीन

मत्ती 5:4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।

वे सभी लोग जो खुद पर, और दुनिया पर, और पाप पर, जय पाने के लिए दृढ़ता से प्रयत्न कर रहे हैं, यदि उनके ह्रदय प्रभु के प्रति उचित नज़रिया रखते हैं तो वे लोग निश्चय पर्याप्त मात्रा में असफलताओं का सामना करेंगें। उनके मार्ग में ये असफलताएँ इसलिए आती हैं ताकि इन्हें निश्चित रूप से मार्ग से दूसरी और हठ जाने के कारण शोक करने के बहुत सारे अनुभव मिल सकें। “वे शान्ति पायेंगें", यह वादा ऐसे शोक करने वालों के लिए वाकई में अनुग्रह से भरा वादा है। हमारे प्रभु ऐसे लोगों को इस आश्वासन के साथ शान्ति देते हैं कि उन्होनें उनके आशुओं को और साथ ही साथ पाप का विरोध करने के लिए किए गए उनके प्रयत्नों को ध्यान से देखा है। इस प्रकार से अभी के अनुभवों के द्वारा प्रभु उनके चरित्र की उन्नति करा रहे हैं और राज्य के लिए उन्हें तैयार कर रहे हैं। R2250,C1,P4 आमीन

मत्ती 5:5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

सेंचुरी शब्दकोश के अनुसार नम्र शब्द का मतलब है --आत्मसंयमी और सौम्य; आसानी से नहीं झुंझलाना नहीं चिढ़ना; चोट या पीड़ा में धैर्य रखना। वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार नम्रता शब्द का मतलब है -- दिव्य इच्छा के आधीन होना; नैतिकता और धार्मिकता की वजह से धैर्य या सौम्यता का होना। R3734, C2, P2

नम्र होने के अनुग्रह का इनाम, दूसरे अनुग्रहों की तरह भविष्य में मिलेगा। नम्र लोग परमेश्वर के वारिस और यीशु मसीह के साथ संगी वारिस होंगें; और पृथ्वी उसी महान विरासत का एक हिस्सा है। यह लोग दिव्य व्यवस्था के अन्तर्गत, हज़ार साल के अन्त में, विरासत में मिले पृथ्वी के अधिकार को, मानवजाति की दुनिया को लौटा देंगें। R2586, C1, P5 आमीन

मत्ती 5:6 धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

"वे तृप्त किये जायेंगें"--वे संतुष्ट किये जायेंगें... हमारे पास प्रभु का पक्का वादा है, कि जो कोई भी आत्मिक भोजन को ढूंढता है और उसे उपयोग में लाने का विचार रखता है, उन सभी को प्रभु आत्मिक भोजन से तृप्त करने की आशीष देंगें। R3735, C1, P1, 2

“तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो”, ये परमेश्वर का वादा है। परमेश्वर के निकट और ज्यादा से ज्यादा निकट जाने की इच्छा हमारे हृदय में अवश्य होनी चाहिए; नहीं तो हम आगे बढ़ने में और मसीह में हमारे विशेष अधिकार को पाने में जरूर असफल हो जायेंगें। परमेश्वर के निकट आने की चाहत ही हमारी धार्मिकता के लिए भूख और प्यास को

प्रगट करती है। इससे पहले की परमेश्वर अपने कार्यों के लिए हमें चुनें और हमें तृप्त करने का अच्छा प्रयास करें, प्रभु यीशु यह उम्मीद करते हैं कि हम धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हों। R5425,C1,P1 आमीन

मत्ती 5:7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

हमारे प्रभु ने कहा था, कि यदि तुम ह्रदय से मनुष्य के अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। इस प्रकार से वह हमें यह सिखाते हैं कि हमारी दया केवल एक औपचारिकता से ज्यादा, बाहरी तौर से की गई क्षमा से ज्यादा होनी चाहिए -- ये (दया या क्षमा) अवश्य ह्रदय से होनी चाहिए, सच्ची होनी चाहिए। इसलिए जैसे-जैसे हमें यीशु मसीह के द्वारा दिव्य दया की आवश्यकता होती है, उसी के बराबर अनुपात में आइये हम दूसरों पर ज्यादा दयावन्त हों --विशेष कर सच्चाई के भाईयों के प्रति। R3735,C1,P5 आमीन

मत्ती 5:8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

एक शुद्ध ह्रदय पूरी तरह से समर्पित ह्रदय होगा जिसने पूरा मन परमेश्वर की इच्छा करने के लिए दे दिया होगा। R5277, C2, P1

ये विचार कितना अनमोल है कि हम इरादों की सम्पूर्ण शुद्धता, प्रेम की सम्पूर्ण शुद्धता को प्राप्त कर सकते हैं। हम सभी मनुष्यों के प्रति और प्रभु के प्रति मन की इस सम्पूर्ण शुद्धता को दिखा सकते हैं। इस प्रकार से परमेश्वर हमें अपने प्रिय पुत्र के रूप में स्वीकार कर लेंगें। हमसे अनजाने में हुई गलतियों और दोषों को जिन्हें हम अपने में पाते हैं और

दूसरे भी हमसे अधिक हममें देखते हैं, मन की शुद्धता को प्राप्त करने से, परमेश्वर इन कमियों को हमारे विरुद्ध नहीं गिनते हैं। ये विचार भी कितना धन्य है कि जिनके मन शुद्ध हैं, वे परमेश्वर को देखेंगें। वे लोग अभी बहुत स्पष्ट रूप से परमेश्वर के चरित्र और उनकी योजना को देखेंगें और शीघ्र ही पुनरुत्थान में बदलने के बाद, जब वे अपने उद्धारकर्ता की समानता में जागेंगे, तब वे परमेश्वर को देखेंगे। R3735, C2, P4 आमीन

मत्ती 5:9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

जो लोग ऐसी बातों पर ध्यान लगाते हैं, जो कि सत्य है, उचित है, सुहावने हैं, और मनभावने हैं, वैसे लोग एक दूसरे के साथ ऐसी ही बातें करेंगें। अतः ये बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम अपने ह्रदय को अच्छी बातों से भर लें। इस तरह से हम अपने मन के भले भण्डार में से लगातार अच्छी बातें बोलेंगें। जो ऐसा करेंगें उनके लिए यह बहुमूल्य वादा है कि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगें। उनके पास परमेश्वर की आत्मा है, और उनके प्रिय पुत्र के स्वरुप की छाप उनके ह्रदय में बन गयी है। हम कितने शान्तिपूर्ण हैं और मेल कराने वाला बनने के लिए कितना प्रयत्न कर रहें हैं, यह एक परिक्षा है जो खासकर हमें यह बताती है की हमने परमेश्वर के पुत्र के रूप में कितनी उन्नति की है? इसी अनुपात में हम शान्ति की और भी बढ़ते हैं। R2588, C1, P4, 5 आमीन

मत्ती 5:10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

हमारा प्रभु में विश्वास और भरोसा दृढ होना चाहिए। भविष्य के जीवन के लिए परमेश्वर ने जो अनुग्रह से भरे वादे किये हैं, उनमें हमारा विश्वास और भरोसा इतना मजबूत होना चाहिए की दुनिया, झूठे भाइयों और शैतान के अन्धे सेवकों का विरोध का सामना हम बराबरी से जवाब देते ह्ुयें कर सकें। हमें इन विरोधों का सामना इतने अच्छे से करना है कि हम अपने शत्रुओं को हमें तराशने के लिए किया गया दिव्य प्रबन्ध का माध्यम समझ कर आनन्दित हो जाएँ। परमेश्वर महिमा वाला मन्दिर बना रहे हैं, जिसका हम जीवित पत्थर हैं। हमारे शत्रु को माध्यम बनाकर ताड़ना के द्वारा परमेश्वर हमें तराशते हैं, आकर देते हैं और चमकाते हैं। यदि हम हमारी परिक्षाओं को इस नजरिये से देखें तो निश्चय हमारे प्राण, हमारा जीवन क़ाबू में रहेगा और हम क्लेश के बीच में भी आनन्द उठा सकते हैं और पूरी स्थिरता से आनन्दित होकर क्लेशों को सह सकते हैं। R2791, C1, P5 आमीन

मत्ती 5:11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।

'धन्य हैं वे', ये वचन इस बात का प्रतीक है कि कष्ट एक तरह से परमेश्वर से मिला उपहार है...निन्दा के कारण नहीं बल्कि इसलिए क्योंकि लोग मसीह के कारण झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहते हैं...यदि हम मसीह के लिए कष्टों को उठायें तो हमारे अभी के सारे कष्ट बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा को हमारे लिए उत्पन्न करते जाते हैं। (2 कुरिन्थियों 4:17) इस दृष्टिकोण से हमें वास्ताव

में मसीह के लिए ताड़ना पाने की इच्छा होनी चाहिए...यह महसूस करते हुए कि यदि हमनें मसीह के लिए दुःख नहीं उठाये, तो प्रभु यीशु का सच्चा चेला होने का एक प्रमाण हममें कम है। परमेश्वर के प्रबन्ध में जब हमें मसीह के लिए दुःख उठाने का मौका मिलें तो हमें आनन्दित होना है। R5544, C1, P4, 5,6 आमीन

मत्ती 5:12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥

इन कष्ट भरे अनुभवों के द्वारा दुखी और निराश होने की जगह हमें एकदम विपरीत निष्कर्ष निकालना है। हमें इन अनुभवों में अचम्भा नहीं करना है और न ही इन्हें इस बात का प्रमाण समझना है कि परमेश्वर हमारे विरुद्ध हो गए हैं। हमें अपने आप से ये कहना चाहिए कि ये बिल्कुल वैसे ही अनुभव हैं जैसे प्रभु ने और उनके लोगों ने पाए थे...इस तरह से कष्टों में निराश होने की जगह हमें आनन्दित होना है। ऐसा नहीं है कि कोई ताड़नाओं में आनन्दित रह सकता है क्योंकि हर प्रकार की ताड़ना कष्टदायक ही होती है। हमें क्लेशों में आनन्दित इसलिए रहना है, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। R5545, C1, P5 आमीन

मत्ती 6:30 इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह इनसे बढ़कर क्यों न पहिनाएगा?

क्या गरीबी आपको कचोट रही है और उसके कारण आप का मन व्याकुल है? आप इस व्याकुलता को भी परमेश्वर के पास प्रार्थना में लेकर जाएँ, उसके बाद आप के हाथ में जो साधन है उनका उपयोग सावधानी से करें ताकि अच्छी वस्तुएँ उपलब्ध कराई जा सके। ऐसा करते हुए धीरज और विश्वास के साथ प्रार्थना के उत्तर का इन्तज़ार करें और दिव्य प्रबन्धों के संकेतों को ध्यान से देखते रहें। निश्चय परमेश्वर जो मैदान की घास को वस्त्र पहनाते हैं वे आप के वस्त्रों और भोजन से जुड़ी जरूरतों को अवश्य पूरा करने में सक्षम हैं और चाहते भी हैं कि वे इन जरूरतों को पूरा करें। R1865, C2, P6 आमीन

मत्ती 6:32,33 क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिये पहले तुम उस राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

आइये राज्य की खोज करना हमारे जीवन का श्रेष्ठ मामला हो। यदि राज्य की खोज करने से कुछ सांसारिक मामलों में बाधा भी पहुँचे तो वो उतना ही अधिक बेहतर है। हमारे स्वामी ने भी कहा था कि इसके लिए हमें हमारा सब कुछ बलिदान करना पड़ेगा। R5048, C2, P5

यदि हम राज्य को प्रथम बना लें, तो हमारी सभी सांसारिक जरूरतें भी पूरी की जायेगी। R5917, C2, P4 आमीन

मत्ती 10:30 तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं।

अहा! ऐसे प्यारे, स्थायी देखभाल का अहसास कितना मीठा है! R5803, C1, TOP

इन लोगों को यह नहीं मानना है कि उनका एक भी मामला आकस्मिक होता है, क्योंकि ये लोग प्रभु के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं और परमेश्वर ने इनके समर्पण को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया है, इसलिए उनके जीवन के सारे मामले, बड़े और छोटे, दिव्य निगरानी में हैं--चाहे उनका स्वास्थ हो या बिमारी, उनके अधिकार हो या विशेष अधिकार हो, उनकी खुशियाँ हो या दुःख हो। R3415, C2, BOTTOM

जिन्होनें हमारे सिर के बाल भी सब गिने हुएँ हैं, उनके लिए क्या कोई बात बहुत छोटी हो सकती है? इसलिए हमारे पारिवारिक या व्यापारिक सभी चिन्ताओं में हमें परमेश्वर की प्यारी सहानुभूति और सहायता जरूर मिल सकती। R1865, C2, P4 आमीन

मत्ती 11:27 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।

पहली बार पढ़ने पर इस वचन का बहुत थोड़ा सा मतलब एक औसत दर्जे का पाठक समझ पाता है। एक मसीही जो कई वर्षों से लगातार उन्नति कर रहा है, जो प्रभु के अनुग्रह में और ज्ञान में बढ़ रहा है, वही मसीही इस वचन की बेहतर सराहना कर सकता है। वो यह महसूस कर सकता है कि यघपि प्रारम्भ में उसके पास यीशु के बारे में और पिता के बारे में

कुछ ज्ञान था, तोभी घनिष्टता से पिता को जानना और पुत्र को जानना अपने आप में एकदम अलग मामला है। उन्हें घनिष्टता से जानने का मतलब है उनके साथ अच्छी तरह से परिचित हो जाना, उनके मन को ठीक वैसे ही जान पाना जैसे कोई अपने एक घनिष्ठ मित्र के मन, ह्रदय को जानता है। इस तरह की पहचान को पाना एक विशेष अधिकार है। ऐसा परिचय हर किसी को नहीं मिलता। इसे पाने के लिए ढूढ़ना पड़ता है और खटखटाने की आवश्यकता होती है और ऐसा ढूढ़ना और खटखटाना घनिष्ठ मेलजोल और सम्पर्क बढ़ाने के लिए गम्भीर इच्छा को दर्शाता है। R2624, C2, P4 आमीन

मत्ती 18:10 देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं।

यहाँ पर स्वामी के वचनों से यह मालूम पड़ता है कि कम से कम एक या अधिक स्वर्गदूतों को समर्पित लोगों पर, यानी अत्यन्त चुने हुओं पर देखभाल की जिम्मेवारी दी गई है। इस मामले को हमें समझाने के लिए वो एक अलग दृष्टान्त का उपयोग करते हैं। वो हमें ये आश्वासन देते हैं कि--हमारे कल्याण के लिए कार्य करने में इन दूतों के द्वारा कोई देरी नहीं होगी, किसी भी ज्यादा महत्वपूर्ण स्वर्गीय कार्य के कारण कोई बाधा नहीं आएगी, बल्कि इन दूतों को एक ही बार में--दिव्य उपस्थिति तक पहुँचने की सीधी पहुँच रहेगी, ताकि हमारे सभी हितों को हर प्रकार का जरुरी महत्व मिल सकें। R3441, C1, P2 आमीन

मत्ती 28:20 और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥

वे सभी लोग जो विश्वासी होकर प्रभु में बने रहते हैं, वे सभी जो सच्चाई से यह कह सकते हैं कि --"मैं अपने प्रेमी की हूँ और मेरा प्रेमी मेरा है"। (श्रेष्ठगीत 6:3), ऐसे लोगों के पास यह वादा न केवल आने वाले जीवन के लिए है बल्कि अभी के जीवन के लिए भी ये वादा है। वे लोग अपने स्वामी की आवाज़ यह कहते हुए सुनते हैं कि "देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ"। और इस जगत के अन्त में प्रभु विशेष रूप से निकट हैं, वे विशेष कर प्रिय हैं। छोटी झुण्ड के पहले पुनरुथान में बदल कर प्रभु को उनकी महिमा में देखने से पहले ही अपनी दुल्हन के लिए उसके प्रभु ख़ास तौर पे निकट हैं। अभी के समय में जब प्रभु यीशु मसीह, आत्मिक रूप में उपस्थित हैं तो ये उनकी दुल्हन का विशेष अधिकार है कि, वो इस बहुमूल्य वादे को खुद के लिए लागू करें और यह महसूस करें कि ये वादे पूरी तौर से उसी के हैं--सारे बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ, जो की परमेश्वर के दिव्य वचन हैं, वे सारे के सारे प्रभु यीशु की दुल्हन के लिए ही हैं। R4784, C1, P3, 4 आमीन

लूका 11:13 सो जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा॥

जब हम परमेश्वर की पवित्र आत्मा ज्यादा से ज्यादा पाने की चाहत रखते हैं और मांगते हैं, तो हमारे स्वर्गीय पिता प्रसन्न होते हैं। ये एक ऐसा प्रबन्ध है जो अधिक से अधिक परमेश्वर की आत्मा से तालमेल रखता

है। इसलिए जो कोई भी पवित्र आत्मा पाने कि चाहत रखता है और माँगता है और इसे ढूंढ़ता है, उनकी भली इच्छा अवश्य पूरी होगी। ऐसे लोगों के जीवन के मामलों को पिता प्रसन्न होकर इस प्रकार से सुनियोजित करते हैं, कि उनमें या उनके वातावरण में जो कुछ भी आत्मा में बढ़ने के लिए बाधा बने, उन सभी पर वे जय पा सकें। ताकि परमेश्वर की प्रेम की आत्मा उनमें बढ़े और वे पवित्र आत्मा से भर जाएँ। पवित्रता की आत्मा केवल उन्हीं में ज्यादा से ज्यादा बढ़ सकती है जो प्रार्थना के द्वारा पूरा प्रयत्न करते हैं और पवित्र आत्मा को पाने की चाहत रखते हैं और उसे ढूँढ़ते हैं। E223 आमीन

लूका 12:32 हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

न ही स्वर्ग में या पृथ्वी पर किसी भी अन्य प्राणियों को विशेष अनुग्रह के ऐसे चिन्ह प्राप्त होंगे जो कि मसीह की प्यारी दुल्हन का हिस्सा है और सदा के लिए उसका हिस्सा रहेंगे। हालांकि स्वर्ग और पृथ्वी में पूरे परिवार को उनके (प्रभु यीशु के) द्वारा आशीष मिलेगी, उनके काम में उनके साथ सहयोग करते हुए, उनकी पत्नी ही, अकेले उनकी साथी, उनकी विश्वासपात्र, उनका खजाना होगी। R.5862, c.2, p.4.

यद्यपि कुछ ही लोग परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूरे समर्पण के इस कदम को लेते हैं, फिर भी उनसे भी कम लोग अपने ह्रदय को लगातार केवल प्रभु की इच्छा के ही अधीन रखते हुए, इसे व्यावहारिक रूप से जीते हैं। R1563, c2, top आमीन

लूका 12:37 …मैं तुमसे सच कहता हूं, कि वह कमर बान्ध कर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उनकी सेवा करेगा।

जो भी मानते हैं कि हम कटनी के समय में हैं, कि हम उसमें 1875 ईस्वी से हैं, - उन्हें यह भी स्वीकार करना चाहिए, कि प्रभु ने वादा किया है कि उस समय वे अपने लोगों को आध्यात्मिक भोजन के भरपूर भोज के लिए बैठाएंगे और वे उनके दास होंगे और उन्हें 'नई और पुरानी वस्तुएँ' लाकर देंगे। वे सभी जो इन चीजों को पहचानते हैं उन्हें इन बाइबल के वचनों के अध्ययन की पुस्तकों (छः वॉल्यूम्स) को इस वादे की पूर्ति के रूप में पहचानना चाहिए। R4709, c2, p5 आमीन

यूहन्ना 6:45 "वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे"

वह जो परमेश्वर की ओर से सिखने को जारी रखता है, उसे अवश्य उनकी आवाज को सुनना भी जारी रखना चाहिए, और उसका हृदय सुनते रहने और आज्ञापालन करने के नजरिये में बना रहना चाहिए। स्पष्ट रूप से कुछ लोगों के साथ कठिनाई यह है कि उनकी अपनी इच्छा पूरी तरह से बुझी नहीं है, मरी नहीं है - कि उनका समर्पण पूरा नहीं है; इसलिए यद्यपि उन्होंने परमेश्वर की आवाज की अवज्ञा नहीं करने की इच्छा रखते हुए पर्याप्त समर्पण किया था, उनके अपने कुछ ख्याल हैं कि परमेश्वर की आवाज को क्या कहना चाहिए, और वे उनके संदेशों का अर्थ अपनी खुद की प्राथमिकताओं के अनुरूप लगाते हैं: वे कम या अधिक अपनी खुद की इच्छाओं को करने के इच्छुक रहते हैं, और परमेश्वर की आवाज को

अपनी इच्छाओं के अनुसार अगुवाई करने के लिए सुनने के इच्छुक रहते हैं। यह एक सबसे खतरनाक स्थिति है, और आमतौर पर आत्म - अभिमान और आत्म - निष्ठा इसके साथ होते हैं और अंततः यह मसीही लक्ष्य से दूर ले जायेगा। आइये हममें से प्रत्येक परमेश्वर की कृपा से संकल्प लें कि हम एक ईमानदार ह्रदय से निरन्तर परमेश्वर के शुद्ध वचन को सुनना चाहेंगे और यह कि जहाँ तक हम सक्षम हैं इसे मानने की इच्छा रखेंगे। R. 4092, C.2, P.3. आमीन

यूहन्ना 7:17 यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं।

हमारे स्वामी प्रभु यीशु ने अपने होठों से इस संदेशे को व्यक्त किया है। परमेश्वर के उपदेशों का प्रभु यीशु को जो स्पष्ट ज्ञान है, उसके पीछे के रहस्य की चाबी वो हमें इस वचन में देते हैं। यानि, एक छात्र को अवश्य परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए और परमेश्वर की इच्छा और उनकी योजना को जानने के लिए पूरी तरह से इच्छुक होना चाहिए। दिव्य प्रकाशन को दिव्य दृष्टिकोण... से देखने के लिए, हमें हमारे मन की आत्मा और ह्रदय के समर्पण में अवश्य परमेश्वर के निकट आना चाहिए। हमारे में अवश्य परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की इच्छा होनी चाहिए... यही वो लोग हैं जिनपर इस वचन में जो वादा है, वो लागु होता है - कि "यदि कोई परमेश्वर की इच्छा को करेगा, तो वह बाइबल के उपदेशों को समझ और जान पायेगा, फिर चाहे वे उपदेश परमेश्वर के हों या मैं अपने से बोलूँ"... तब क्या हमें... अपने मन की इच्छा में परमेश्वर की इच्छा करने का दृढ़ संकल्प नहीं कर लेना

चाहिए? यदि हम परमेश्वर के वचन से मिले आदेशों का पालन करते हुए... अपने मन की इच्छा में परमेश्वर की इच्छा करने का दृढ़ संकल्प कर लें, तो निःसंदेह हम आशीषित होंगे और मसीह के उपदेशों को पूरी तरह से जानने, कद्र करने, समझने में सक्षम होंगे - परमेश्वर की गूढ़ बातें, इस समूह के लोगों पर परमेश्वर की आत्मा के द्वारा प्रगट की जाएगी। R5137,C2,P3,5,6 आमीन

यूहन्ना 8:31-32 यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

प्रभु के वचन में बने रहने का मतलब है - परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए पवित्रशास्त्र के उपदेशों में बने रहना, उनका अध्ययन करना और उनपर ध्यान करना, आँख मूंद कर इनपर भरोसा करना, और विश्वसनीय होकर हमारे चरित्र को इन उपदेशों के अनुसार ढालना। **R**3153,**C**2,**P**2

क्या धन्य वादा है कि "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" हे प्रियों, प्रभु से सत्य को जानने और स्वतंत्रता के इस अनुग्रह को पाने के बाद, क्या हमें भरमानेवाली शिक्षाओं पर बिना मन लगाए, सत्य में बने नहीं रहना चाहिए? और क्या हमें सत्य के प्रति सभी परिस्थितियों के अंतर्गत, हर हमले के विरुद्ध इसका बचाव करते हुए, और इसके साथ इसके कारण आनेवाली निन्दाओं को सहते हुए, विश्वासी नहीं रहना चाहिए? आइये हम हमारे अंदर सत्य के प्रति जो क़द्र है, उसे इसके प्रति हमारी वफ़ादारी और विश्वसनीयता को दिखाकर साबित करें। R3154,C2,P1 आमीन

यूहन्ना 10:3 वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।

कुछ लोग उस विशेष रुचि को देखने में विफल हो सकते हैं, जो प्रभु हर एक में लेते हैं, जो उनके हैं। बलिदान की वाचा में प्रवेश करने के विशेष अर्थ में, परमेश्वर का हर सच्चा बच्चा प्रभु का है। हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए ... स्वामी ने अपने प्रत्येक चेले में उनकी खास और निजी रुचि पर जोर दिया है। वह खुद को उनका चरवाहा कहते हैं, और बोलते हैं, "वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है"। इसका अर्थ है उनके सच्चे शिष्यों में से प्रत्येक के मामलों और हितों की एक बहुत ही विशेष निगरानी। जो कुछ भी इन पर आ सकता है, वह मौका या भाग्य की बात नहीं है। R5711,C2,P3 आमीन

यूहन्ना 10:4-5 और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी।

परमेश्वर की इस भेड़शाला में आने के बाद, हमारे पास महान चरवाहे पर भरोसे के लिए हर कारण है, और हमें उनकी निरंतर देखभाल को और उनकी हमारे आत्मिक कल्याण में जो सर्वोच्च रुचि है, उसको पहचानना चाहिए। आइए हम अच्छी भेड़ें बनें! आइये हम इस भेड़शाला से दाहिने हाथ या बाईं ओर न भटकें, और न ही हरी - हरी चराइयों और शुद्ध जल से भटक कर किसी गली की जहरीली और काँटों से भरी झाड़ियों में और मानवीय अटकलों और मनुष्यों के भ्रमित करने वाली प्रदूषित और मटमैले पानी की ओर आकर्षित हों। यदि हम प्रभु की सच्ची भेड़ हैं, तो हम उनकी आवाज को पहचानेंगे। हम गलती नहीं

करेंगे। सच्ची भेड़...उसकी पुकार का तुरंत जवाब देगी; वह प्रभु की अगुवाई का इंतज़ार करेगी। R5491,C1,P2; C2,P1 आमीन

यूहन्ना 10:27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।

कई लोग प्रभु की झुंड की सच्ची भेड़ होने का दावा कर रहे हैं, लेकिन हमारे चरवाहे (प्रभु यीशु) की उपस्थिति के इस दिन में उनकी आवाज, सत्य, हमारे लिए परीक्षा बन जाती है। R2673,C1,P1

अभी हम विभिन्न दिशाओं से भेड़ों को बुलाने वाली कई प्रकार की आवाजें सुनते हैं, जैसा पहले कभी नहीं था। यह उनकी स्वयं की "छोटी झुंड" को अन्य सभी से अलग करने के उद्देश्य से, परमेश्वर के प्रावधान हैं। प्रभु की भेड़ें प्रभु की आवाज सुनेगी और उनके पीछे जाएगी -- दूसरी भेड़ें, नेताओं, मनुष्य के द्वारा बनाई गई संस्थानों, सिद्धांतों और प्रयासों की ओर मुड़ेगी और इस तरह से "छोटी झुंड" से अलग हो जाएगी और यही हमारे प्रभु को भाता है। R2673,C1,P4 आमीन

यूहन्ना 14:3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

प्रभु के विश्वासी लोगों के हृदय में, इस वादे के इर्द - गिर्द क्या आनन्दायक आशाएँ, क्या उल्लासपूर्ण उम्मीदें जमा होती हैं। कुछ ही शब्दों में यह वादा उन सभी अच्छी बातों को बताता है, जो परमेश्वर ने उनके लिए आरक्षित रखी हैं, जो उनसे प्रेम करते हैं... जिस हद तक परमेश्वर के वचनों की गवाही हममें ठीक

से वास् करती है, और हमें दिव्य प्रेम की लम्बाई और चौड़ाई को और हमारी अनजानी कमियों को ढकती हुई उनकी करुणा को पहचानने में सक्षम करती है - उसी हद तक प्रभु के विश्वासी लोग इस वादे में आनंदित हो पाते हैं, और न केवल प्रभु से मिलने के अवसर की ओर तत्परता से देखते हैं, बल्कि परमेश्वर की उपस्थिति और संगती में अनंतकाल तक अपने आपको बना हुआ देखकर अति आनंदित होते हैं। लेकिन अन्य सभी के लिये...जो प्रभु यीशु के पद चिन्हों पर सावधानीपूर्वक चलने की खोज में नहीं हैं, इस वचन का वादा केवल कुछ मात्रा में आनंद, कुछ मात्रा में आशा लाता है, और न की प्रचुर मात्रा में उमड़ता हुआ आनंद और आशा लाता है। R3191,C1,P5,6 आमीन

यूहन्ना 14:21 जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।

क्या परमेश्वर की संतान, उनकी महिमा के वारिस, सभी बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के वारिस, और दिव्यता के वर्तमान साथी जो हमारे निम्न स्तर के प्रति संवेदनशील है, कभी भी अपने आपको असंतुष्ट या त्यागा हुआ या अकेला महसूस करेंगे? या क्या उन्हें डरना चाहिए की, प्रभु का प्रेम, उन्हें इस संसार के सरदार की दया पर, जो आज्ञा न माननेवालों के ह्रदय में काम करता है, कभी भी, दुर्भाग्य की लहरों पर विवश होकर फेंक दिए जाने के लिए, छोड़ देगा या त्याग देगा? आह नहीं! जो हमारी ओर है वो उन सबसे बड़ा है जो हमारे विरुद्ध में हैं। हम इस संसार में अकेले नहीं हैं; क्योंकि हमारे पास यह धन्य वादा है, "मैं तुझे न कभी छोड़ूंगा न कभी त्यागूंगा" (इब्रानियों 13:

5), न ही हमारे छोटे से छोटे हित को अनदेखा किया जायेगा। R1906,C2,P2 आमीन

यूहन्ना 14:23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।

अनुग्रह में बढ़ना प्रभु से एक गहरी निजी पहचान और आत्मा में परमेश्वर के साथ संगती के द्वारा प्रभु के समर्थन में बढ़ना है। इससे हमें पहला तो यह संकेत मिलता है की, प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हम हमारे छुटकारे को जानते और अपनाते हैं और पिता के सभी वादों पर जो हमें प्रभु यीशु के द्वारा दिए गए हैं, एक निजी विश्वास करते हैं और उन वादों पर निर्भर करते हैं, और फिर उसके बाद हमारे प्रतिदिन के प्रार्थना के जीवन में पिता के साथ नजदीकी से बातचीत करते हैं और पिता की इच्छा को पहचानकर उसका पालन करते हैं। यदि हमारे मन और हृदय का निरंतर ऐसा दृष्टिकोण हो, तो अवश्य आत्मा के फल निरंतर पकते जायेंगे, और हमें अधिक से अधिक हमारे प्रभु के प्रति भावते हुए और ग्रहणयोग्य बनाते जायेंगे। हमारे प्रभु के इस अनमोल वचन की पूर्ति करने के रूप में, दिव्य स्वीकृति और अनुग्रह की भावना हमें दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई माप में दी जाती है। R3215,C1,P6 आमीन

यूहन्ना 14:27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, <u>अपनी शान्ति</u> तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

इस प्रकार, करुणा और कोमलता के साथ, हमारे प्रभु ने, अपने सांसारिक जीवन की आखिरी रात में, अपने प्यारे चेलों को उनसे अलग होते समय, उनको अपने पिता से विरासत में मिली उनकी अपनी शांति की आशीषें दी। यह (मसीह की शांति) उनकी सबसे समृद्ध विरासत थी, जिसकी उनको वसीयत करनी थी, और इसका मूल्य अनमोल था। यह आत्मा की उस शांति, मन के उस विश्राम और चैन का वादा था, जो स्वयं प्रभु यीशु के पास थी - परमेश्वर की शांति (और यह परमेश्वर की शांति थी जो प्रभु यीशु के पास विरासत में थी)। यह वही शांति थी, जिसका पिता ने हमेशा, यहां तक कि बुराई की अनुमति से आये सभी हंगामे के बीच में भी, आनंद लिया है, लेकिन परमेश्वर के पास जो शांति है, उसके उत्पन्न होने का स्त्रोत एक ही नहीं है। यहोवा परमेश्वर में यह शांति आत्म-केंद्रित थी, क्योंकि उन्होंने अपने आप में शक्ति और ज्ञान की सर्वशक्तिमानता को समझ लिया था; जबकि मसीह की शांति, स्वयं में नहीं, परन्तु परमेश्वर की बुद्धि, शक्ति और अनुग्रह में विश्वास के द्वारा, परमेश्वर पर केंद्रित थी। इसलिए अगर हमारे पास भी "परमेश्वर की शांति", मसीह की शांति - "अपनी शांति" - हो, तो यह जरुरी है की , प्रभु यीशु मसीह की तरह, इस शांति को विश्वास के द्वारा परमेश्वर पर केंद्रित होना चाहिए। R1834,C1,P3 आमीन

यूहन्ना 15:2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।

प्रभु के छाँटने के तरीकों को सभी डालियों (प्रभु यीशु की देह का अंग बन रहे चेलों) को समझना चाहिए, अन्यथा वे हतोत्साहित और गिर सकते हैं और उचित फल लाने में विफल हो सकते हैं। ऐसा लगता है कि महान किसान

(परमपिता), कभी-कभी सांसारिक धन या संपत्ति छीनकर या कभी-कभी मनभावनी कल्पनाओं और योजनाओं में बाधा डालकर, मसीह की डालियों की छँटाई करते हैं। कभी-कभी परमेश्वर ताड़नाओं और नाम और प्रसिद्धि की हानि की अनुमति देकर हमारी छँटाई करते हैं, और कभी-कभी . . . उन सांसारिक मित्रताओं को तोड़ने की अनुमति देकर हमारी छँटाई करते हैं, जिनपर हमारा ह्रदय एक लता की तरह बहुत मजबूती से पकड़ बनाये रखता है . . . . प्रभु के प्रिय लोगों में से कई ने अपने सबसे मूल्यवान पाठों को दुःख के बिस्तर पर पाया है . . . . इस तरह की छँटाई के तरीके हमें हतोत्साहित करने की बजाय, सही समझा जाये तो, हमारे लिये प्रोत्साहन के स्रोत होने चाहिए। हम महसूस करते हैं ... कि जब हमारे पास ये विशेष छँटाईयाँ हैं, तो यह एक प्रमाण है, कि पिता आप ही हमसे प्रेम करते हैं और हमारे सर्वोत्तम हितों की देखभाल कर रहे हैं। R3545,C1,P3-5 आमीन

यूहन्ना 15:7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।

यदि आपका मन और ऊर्जा परमेश्वर पिता की योजना में पूरी तरह से डूबा हुआ है, तो आप अपने ह्रदय की सभी इच्छाओं के अनुसार माँग सकते हैं -- "मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा"। परमेश्वर हमसे यह उदारता से भरा वादा करते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ... पिता अपनी योजनाओं को हमारे लिए बदल देंगे और हमारी इच्छा करेंगे, लेकिन जब आप पूरी तरह से पिता और उनकी युगों की योजना के साथ सहानुभूति में आ जायेंगे, जिसको उन्होंने हमारे लिए बनाया है, तब आप कभी भी असंतुष्ट नहीं होंगे, लेकिन हमेशा अपनी इच्छाओं को पूरा होते हुए देख सकते हैं, क्योंकि हमारी इच्छा और

चाहत, हमारा आनंद और संतुष्टि इसमें होगी, की हम यह देख पाएं की, परमेश्वर की इच्छा और उनकी योजना परमेश्वर के अपने तरीके और समय के अनुसार बढ़े। इस प्रकार हमारी हर प्रार्थना और मनोकामना पूरी होगी-- उन लोगों के अनुभव के पूरे विपरीत जो अपनी मर्जी करना चाहते हैं ... और अपनी इच्छाओं के लिए प्रार्थना करते हैं। R1999,C1,LAST P आमीन

यूहन्ना 15:9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो।

यह क्या ही सुन्दर सोच है, कि हमारे गुरु हमारे प्रति उसी तरह का प्रेम रखते हैं, जैसा पिता का उनके प्रति है! यदि हमारा विश्वास हमेशा इस सोच को पकड़ सके और इस पकड़ को बनाए रखे, तो हमारे पास वास्तव में चाहने या डरने के लिए कुछ भी नहीं होना चाहिए - हमारी खुशहाली सदा बनी रहेगी। सुझाव दिया गया अगला विचार यह है कि, यहाँ तक (जैसा प्रेम पिता प्रभु से करते हैं वैसा ही प्रेम प्रभु हमसे करें) पहुँचने के बाद, प्रभु के अनुग्रह में इस ऊँचे पद को प्राप्त कर लेने के बाद, यदि हम उनके चेले हैं और उन्होंने इस मामले में हमारे लिए जो किया है, उसकी हम सचमुच में कदर करते हैं, तब हममें उनके प्रेम में बने रहने की चाहत होगी। इसी क्रम में अगली बात में, नियम और शर्तें आती हैं, जिनके ऊपर हम इस प्रेम में बने रह सकते हैं, अर्थात्, यह की हम उनकी आज्ञाओं का पालन करें। यह सुझाव अनुचित नहीं है, इसे दिखाने के लिए, हमारे प्रभु ने वचन में बताया है की, ये वही शर्तें हैं जिनके ऊपर परमेश्वर पिता उनके साथ बर्ताव करते हैं, "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं" (यूहन्ना 15:10) वचन। यदि हम उनकी

आज्ञाओं के प्रति लापरवाह रहें, तो हम प्रभु के प्रेम में बने रहने की उम्मीद नहीं कर सकते। R3546,C2,P4,5 आमीन

यूहन्ना 15:16 तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है।

दुनिया इन चुने हुए लोगों को पसंद नहीं करती है, क्योंकि अपनी खुद की कमजोरियों को स्वीकार करते हुए और उनके विरुद्ध प्रयास करते हुए, वे इन कमजोरियों को उनके उचित नामों से बुलाते हैं - पाप, धूर्तता, शरीर और मन की मलिनता। इन चुने हुए लोगों का अपने आप को शुद्ध करने के लिए किया गया हर प्रयास, दूसरों के लिए एक निंदा के समान है, जो खुद को साफ करने के लिए प्रयास नहीं कर रहे हैं, और जो यह याद दिलाने से नफरत करते हैं कि, जिन चीजों में वे अपना सबसे बड़ा आनंद लेते हैं, वे हैं - लालच, स्वार्थ, हद से ज्यादा लगाव, झगड़ा, घमण्ड, झूठी बढ़ाई। जो कोई भी दुनिया के लिए पूरी तरह से संतोषजनक है, वह यह सुनिश्चित कर सकता है कि, वह प्रभु के लिए संतोषजनक नहीं है। जो कोई भी प्रभु के लिए संतोषजनक है, वह दुनिया के लिए संतोषजनक होने की उम्मीद नहीं कर सकता है; इस संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है, और इसलिए, संसार दिव्य स्तर के अधीन नहीं है, न ही वास्तव में हो सकता है .... दुनिया का ह्रदय दूसरी दिशा में है। R5737,C2,P5 आमीन

यूहन्ना 16.13 परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों ने मन में ज्योतिर्मय प्रकाश पाया जिसने उन्हें परमेश्वर की गुढ़ बातों को समझने में सक्षम किया। प्रभु यीशु के मन में यही विचार था, जब उन्होंने कहा था कि उनको अपने चेलों से और भी बहुत सी बातें कहनी है, लेकिन वे उन्हें अभी समझ नहीं सकते, लेकिन वे बाद में इन बातों को जानेंगे, क्योंकि प्रभु यीशु पवित्र आत्मा भेजेंगे, जो इनको प्रभु के द्वारा कही गयी सारी बातों को याद दिलाएगी; और आनेवाली बातें भी इनको बताएगा। यह केवल प्रेरितों के लिए ही सच नहीं था, बल्कि इस पूरे सुसमाचार के युग में मसीह की देह के सभी सदस्यों के लिए भी सच है...इन्हीं के लिए बाईबल में यह वादा किया गया है, "वह आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा"। ये वही लोग हैं जिनको उचित समय में सब सत्य का मार्ग बताया जाएगा। ये वही लोग हैं जिनके लिए परमेश्वर के वचन एक भण्डार हैं, जिसमें से "पुरानी और नई वस्तुएँ" पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अन्तर्गत बाहर निकाली जाएंगी, "विश्वास के घराने" के लिए, जो कि उनके लिए "उचित समय का आहार" होंगी। R5088,C1,P6-8 आमीन

यूहन्ना 16:22 और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।

हमारे वो कौन से आनंद हैं, जिन्हें कोई मनुष्य हमसे छीन नहीं सकता? और जिसे ताड़ना और संकट और परेशानी केवल और गहरा कर देती हैं, और बढ़ा देती हैं, और अधिक मीठा बना देती हैं? यह कैसा आनंद है? यह आनंद भविष्य में मिलने वाली आशीषों को पहले से चखना है, और यह आनंद हमारी विरासत का एक बयाना है। इस आनंद को उस परमेश्वर में दृढ़ भरोसा करने के द्वारा प्रेरणा मिलती है, जिसपर हमने विश्वास किया है: दृढ़ता से यह भरोसा की,

परमेश्वर ने जो काम आरम्भ किया है, उसे वे पूरा करने में पूरी तरह से सक्षम हैं, और उसे पूरा करने की इच्छा भी रखते हैं, और हम चाहते हैं की, यह काम परमेश्वर के अपने सर्वोत्तम तरीकों से पूरा किया जाये: दृढ़ता से यह भरोसा की, जब तक हम विश्वास के हाथों से परमेश्वर के अनुग्रहित वादों को कसकर पकड़े रहेंगे, परमेश्वर हमें अपने आप से अलग होने की अनुमति कभी भी नहीं देंगें। हमारा दृढ़ भरोसा यह है की, "कोई हमें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता", और यह है की, "पिता आप ही हमसे प्रेम रखते हैं", और जब तक हम आज्ञाकारी बनकर उनके प्रेम में बने रहने की चाहत रखते हैं, पिता हमें अपने आप से दूर नहीं करेंगें। R2232,C1,P1 आमीन

यूहन्ना 16:24 अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए॥

जब तक हम प्रभु को अपने प्रतिदिन के जीवन में अपने जीवित, निजी साथी और गोपनीय मित्र और सलाहकार और दिलासा देने वाले और मार्गदर्शक के रूप में और साथ ही साथ हमारे उद्धारक और प्रभु के रूप में न ग्रहण कर लें, तब तक हम प्रभु से पूरी तरह से उन बहुमूल्य पाठों को नहीं सिख सकते, जो उनके चेलों को एक ऐसा आनंद देते हैं, जिसे संसार न तो उन्हें दे सकता है और न ही उनसे छीन सकता है। ऐसा हो की, मसीह के साथ यह घनिष्ट सहभागिता और संगति, हममें से प्रत्येक को ज्यादा से ज्यादा उनकी अपनी आत्मा दे, ताकि जैसा प्रेरितों के साथ हुआ था (प्रेरितों 4:13), संसार यह जाने, की हम यीशु के साथ रहे हैं। R1789,CENTER OF PAGE आमीन

यूहन्ना 16:27 पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है।

मेरे प्रिय भाइयों, परमेश्वर की संतान के रूप में, यह वचन हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम के बारे में क्या सिखाता है, इसके बारे में आपका क्या विचार होगा? परमेश्वर के पास संसार के लिए एक प्रेम है। एक परमेश्वर, एक सृष्टिकर्ता के रूप में, वे अपने सभी प्राणियों की देखरेख करते हैं। परमेश्वर ने प्रत्येक प्राणी, यहाँ तक कि गौरैया के लिए भी प्रावधान किया है। लेकिन उन सभी के लिए जो मन के इस वफादार स्थिति में आए हैं, परमेश्वर के पास प्रेम है - सहानुभूति, और अधिक, आदर है! … मुझे लगता है, और आपको भी ऐसा ही लगता होगा, कि परमेश्वर हमसे बहुत, बहुत अधिक प्रेम करते हैं, नहीं तो उन्होंने कभी भी हम जो मसीह यीशु में हैं, उनके प्रति अपने अनुग्रह के असीम धन और करुणा के अंतर्गत इतने अद्भुत प्रावधान नहीं किये होते। … हमारा मानना है कि प्रतिदिन, प्रति हफ्ते, प्रति महीने और प्रति वर्ष, जैसा कि हम इन बातों पर सोचते हैं, जैसा कि हम मानते हैं, उनके वचनों का अध्ययन करें और परमेश्वर के महान प्रेम को समझें जैसा कि उनकी अद्भुत योजना में व्यक्त किया गया है, हम कितने अच्छे से यह महसूस कर पाते हैं कि, "पिता तो आप ही हमसे प्रेम रखते हैं"। लेकिन हम इसे पूरी तरह से नहीं समझ सकते हैं। लेकिन यह तथ्य कि कोई भी पिता अपने बच्चे के लिए ऐसी अद्भुत चीजें करेगा, वह पिता के महान प्रेम को बताता है। R5725,C2,P4,6,7 आमीन

यूहन्ना 17:23 और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा।

विस्मय में हम पूछते हैं, यह कैसे हो सकता है ?... लेकिन हमें धोया और साफ किया गया है, और हालांकि, हमारा मिट्टी के बर्तन (हमारा शरीर) अभी भी

अपरिपूर्ण हो सकता है, पर हमारा दिल उनकी दृष्टि में परिपूर्ण हैं जो दिल को पढ़ने में सक्षम हैं। और, जब परमेश्वर हमें ह्रदय की परिपूर्णता के साथ देखते हैं - एक परिपूर्ण उद्देश्य और इरादा - जो की हमारे अपरिपूर्ण शरीर की कमजोरियों और अक्षमताओं को दूर करने का प्रयास करता है, और चाहे दर्दभरा हो, फिर भी दृढ़ता के साथ, उनकी इच्छा करने के लिए प्रयास करता है, और विनम्रतापूर्वक उन प्रावधानों पर भरोसा करता है, जिसका प्रबंध उन्होंने गिरावट से हमारे छुटकारे के लिए किया है, तब वास्तव में प्रभु हमें उस में पहचानते हैं, जो उनके प्रेम के योग्य है। और इस प्रकार से हमारे प्रभु यीशु हमें स्पष्टता से यह समझाते हैं की, पिता हमसे वैसा ही प्रेम करते हैं, जैसा उन्होंने अपने पुत्र से किया। R3161,C2,P2 आमीन

रोमियो 6:5 क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।
अपने मन में याद करें कि प्रभु यीशु के जी उठने की समानता क्या थी? यह मानवीय स्वभाव से कहीं अधिक ऊंचा स्थान था, "सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर"। यहाँ तक की यह ऊंचा स्थान दिव्य स्वभाव पाने तक था, जिसके बारे में प्रेरित पतरस कहते हैं की, जो कोई भी प्रभु यीशु, जो हमारे आदर्श हैं उनके पदचिन्हों के पीछे चलेगा, वो भी दिव्य स्वभाव का समभागी हो सकता है। (2 पतरस 1:4) अपमान और बलिदान से भरे प्रभु यीशु मसीह के पदचिन्हों पर, प्राण देने तक चलना, कोई आसान काम नहीं है। इसका मतलब है दिव्य इच्छा को पूर्ति के लिए हमारी इच्छा का त्याग करना। R1262,C2,P4 आमीन

रोमियो 6:8 क्योंकि यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी।

हमको आने वाली महिमा और प्रभु यीशु मसीह के साथ ऊंचे पद और साँझा वारिस बनने के लिए इस दिव्य निमंत्रण से जुड़ी आवश्यकताएं या शर्तें स्पष्ट रूप से बताई गई हैं: मसीह की मृत्यु में भागीदार होना है, उनकी मृत्यु में साथ गाड़े जाएँ। उनकी मृत्यु में भागीदार होने का मतलब है की हमारे उद्धारकर्ता ने अपना जीवन, खुद की बड़ाई करने में नहीं लगाया, पर उस जीवन को सत्य और धार्मिकता के हित में भस्म कर दिया, पाप का विरोध करते हुए और परमेश्वर की योजना को पूरा करने में, उसी तरह हमें भी हमारा समय, हुनर, उत्साह, अधिकार और विशेष अधिकार परमेश्वर की योजना को पूरा करने में लगा देना है। उनकी छुड़ौती के द्वारा जो उन्होंने हमारे लिए दिया है, हम ना ही अपना सब कुछ परमेश्वर की सेवा में लगा दें, पर इसको विश्वासी होकर मरते दम तक परमेश्वर की सेवा में लगा दें -- जैसा उदाहरण प्रभु यीशु ने हमारे लिए रखा है -- हमको भी उनके पद चिन्हों पर जितना नज़दीक से हो सके चलना है। अगर हम उनके साथ मर गए, उचित समय में हम उनके साथ जियेंगे भी। R1542,C2,P3 आमीन

रोमियो 8:16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

परमेश्वर के बच्चों में गिना जाना एक बड़ा विशेषाधिकार है; लेकिन इसका मतलब जितना बहुत लोग समझते हैं उससे कहीं अधिक है - उनकी ओर से

और परमेश्वर की ओर से - दोनों की ओर से बहुत अधिक है … परमेश्वर की ओर से यह मसीह के माध्यम से उनके सभी अनुग्रह से भरे वादों को पूरा करने का चिन्ह है … यह दर्शाता है की वर्तमान जीवन में हमारे पास परमेश्वर का पिता के समान प्रेम, देखभाल, अनुशासन, परामर्श, शिक्षण, संरक्षण और प्रोत्साहन है; और उसके बाद हम उनकी महिमामय उपस्थिति में, और हमेशा के लिए आराम, खुशी और शांति में ग्रहण किये जायेंगे। ओह, परमेश्वर के लोगों में गिना जाना कितना आशीषित है! यहाँ तक की वर्तमान जीवन में भी परमेश्वर के अनुग्रहों का प्रतिफल गणना से बाहर है। R1787,C2,LAST P; R1788,C1,P1 आमीन

रोमियो 8:17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥

एक मसीही ने अपने सामने सबसे महान महत्वाकांक्षा को रखा है जिसे प्राप्त करना संभव है। परमेश्वर संसार से लोगों को अपने नाम के लिए बुला रहे हैं। इनके सामने परमेश्वर सबसे ऊँची महत्वाकांक्षा रखते हैं। इनको यीशु मसीह, हमारे प्रभु के साथ साँझा वारिस बनने का न्योता दिया गया है। यह एक ऐसी महत्वाकांक्षा है जो उन्हें मन और चरित्र के सभी उच्च गुणों को विकसित करने के लिए प्रेरित करती है, ताकि वे स्वर्गीय पिता और प्रभु की मित्रता, संगती और समाज के लिए खुद को तैयार कर पायें। आइये हम सदा अपने सामने इस उच्च महत्वाकांक्षा को, प्रभु के वचन पर ध्यान देने के सबसे अधिक प्रयास के लिए मिले, एक प्रोत्साहन के रूप में रखें … दुल्हन को अपने आप को तैयार करना है (प्रकाशितवाक्य 19:7)। इसलिए इनको अपने आप को तैयार करने

और परमेश्वर के प्रिय परिवार के अन्य लोगों की तैयार होने में मदद करने की कोशिश करनी चाहिए। R5185,C1,P3,5 आमीन

रोमियो 8:18 क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।

दुनिया अक्सर प्रभु के नम्र बच्चों की उन परिस्थितियों के अंतर्गत शीतलता (शान्तमन) पर आश्चर्य करती है जिसके कारण सबसे साहसी हृदय भी हिम्मत हार जाएगा। लेकिन जीवन में ऐसे मार्ग पर चलने के लिये जो हमारे परमेश्वर की महिमा करे और उनके अनुग्रह की बड़ाई करे, और मसीहियों के रूप में, स्वर्ग के राजा के प्रतिनिधि के रूप में, जिस प्रकार से भी परीक्षाएँ और कठिनाईयाँ हमारे पास आयें उनका बुद्धिमानी और साहसपूर्वक सामना करने में सक्षम होने के लिये, और आनन्दित मन से उनका सामना करने के लिये, हमारे क्लेशों को सब प्रकार के आनन्द की बात समझने के लिये, यह आवश्यक है कि हमारे हृदय प्रभु के साथ तालमेल में हों, और यह की हमारे पास कोई इच्छा नहीं हो बल्कि परमेश्वर की इच्छा ही हमारी इच्छा हो, और मनुष्य का भय खाना, जो फन्दा बन जाता है, उस पर जय पाया जाये। हम इसे अपनी सामर्थ्य में नहीं, बल्कि केवल परमेश्वर की सामर्थ्य में पूरा कर सकते हैं। R5540,C2,P4 आमीन

रोमियो 8:28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

हमारे पास प्रभु के तरफ से पक्का वादा है कि, "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है", जो अपना भरोसा परमेश्वर पर रखते हैं। जो कुछ भी आशीष नहीं है, परमेश्वर उसकी अनुमति नहीं देंगे। R5546,C2,P6

अनुभवों से सीखा हुआ प्राणी यह जानता है की, यहाँ बताई गई “अच्छी बात” हमेशा अच्छी नहीं होती, न ही अक्सर अच्छी होती है, न ही सांसारिक अच्छाई होती है - न ही क्षणिक लाभ है, उनके लिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं... वे ये जानते हैं की "सब चीज़ें" खासकर क्लेश और निराशाएं और जटिलताएं और मुश्किलें और लालसाएँ जो इस सकेत रास्ते में आते हैं, इन सब को शामिल करती हैं, जिस रास्ते में उन्होंने चलने के लिए समर्पण किया है; और जो "अच्छी" चीज़ें हैं, वे हमारे चरित्र को मसीह के चरित्र की समानता में तराशती और चमकाती है, जो अन्त तक विश्वास के द्वारा उस दिव्य आदर और महिमा में परिपूर्ण हो। R2241,C2,P5 आमीन

रोमियो 8:31 यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

परमेश्वर का हर एक सन्त अपने आप से कह सकता है, और अपने ह्रदय की गहराई से ये महसूस कर सकता है की ये उसके लिए परमेश्वर के ये सुन्दर वचन लागू होते हैं, -- की परमेश्वर हमारी ओर हैं। वो परमेश्वर के इन वचनों की महत्व को समझने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन वह निश्चित रूप से इन वचनों का सुन्दर अर्थ समझने में असमर्थ रहेगा। मानवीय मन के लिए दिव्य अनुग्रह और प्रेम और शक्ति के धन को समझना असम्भव है। हम

परमेश्वर के दिव्य अनुग्रह को नहीं समझ सकते हैं, पर उन्हें केवल समझा सकते हैं। यदि परमेश्वर हमारी ओर हैं, उनकी असीमित ज्ञान और सामर्थ के साथ, इसका मतलब यह है की प्रभु यीशु मसीह हमारी ओर हैं, क्योंकि वही परमपिता के साथ हैं; इसका मतलब है की सभी स्वर्गदूत, चेरूबियम और सेराफिम, और सभी स्वर्गीय शक्तियां जिनके बारे में हमें ज्ञान है या नहीं सब हमारी ओर हैं -- सबकी भर्ती हमारी ओर है, हमारा अच्छा करने के लिए, हमारी मदद करने के लिए, आवश्यकता के समय हमको राहत पहुँचाने के लिए, हमें लालसा के समय में खड़ा रखने के लिए, हमको मजबूत रखने के लिए की हम परमेश्वर की इच्छा कर सकें...यह तथ्य की परमेश्वर "हमारी ओर हैं" और वे सब बातें मिलाकर हमारी भलाई ही में बदल देते हैं...यही मुख्य सोच है, पूरा सारांश इस सन्देशे का "हमारे" लिए। R4214,C1,P9; C2,P1 आमीन

1 कुरिन्थियों 3:21,23 इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है॥

इस पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के पास दूसरों की तुलना में ज्यादा आनन्द है; जबकि अन्य लोग लोभी के समान पृथ्वी की वस्तुओं पर अपनी पकड़ बनाने की होड़ में हैं, परमेश्वर के लोग आनंद उठा रहे हैं। जैसा की प्रेरित पौलुस ऐलान करते हैं, "परमेश्वर ने हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से दिया है" (1 तीमुथियुस 6:17 वचन)। परमेश्वर के लोग, जिनमें सांसारिक वस्तुओं को पाने से सम्बंधित लालच की आत्मा नहीं है, वे गलियों से गुजरते समय, दुकान की खिड़कियों के द्वारा दुकानों में प्रदर्शित कीमती वस्तुओं को अपने अधिकार में लेने की इच्छा के बिना देख सकते हैं, बिना यह चाहे कि, कला

और सुन्दरता के विभिन्न कार्य इनकी विशेष देखभाल और नियंत्रण में हो। हम अपने आँखों के द्वारा, दूकान में प्रदर्शित चीज़ों का मज़ा उनपर विशेष ध्यान दिए बिना ले सकते हैं, क्योंकि हम ऐसे समय में हैं, जब हमारा हर एक हुनर प्रभु को और उनकी सेवा को समर्पित है, और हमारे पास करने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण चीज़ें हैं, बजाय उन चीज़ों पर ध्यान देने के, जो तुच्छ सांसारिक वस्तुएं हैं, जिसे कला का कार्य कहा जाता है। R3734,C2,P4 आमीन

1 कुरिन्थियों 10:13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।

कलीसिया के प्रलोभनों और परीक्षाओं के सम्बन्ध में, हमारे प्रभु के वचन हमें आश्वासन देते हैं, कि इस विभाग के लोगों को डरने की कोई जरूरत नहीं है, कि उन्हें सुरक्षित रखा जाएगा, कि उन्हें प्रलोभन देना संभव नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक प्रलोभन के साथ प्रभु भागने का एक रास्ता भी प्रदान करेंगे ... हमारी इच्छा यह है की, परमेश्वर का प्रत्येक बच्चा जिसने समर्पण की वाचा बाँधी है, वो भागने के इस रास्ते को जिसे परमेश्वर ने प्रदान किया है, देख सके और उसका उपयोग भी कर सके, और इस प्रकार से प्रभु के प्रावधान के अनुरूप रहे और अत्यंत चुने हुओं - यानि "बुलाये गए , चुने गए और विश्वासी" लोगों की तरह परमेश्वर की सुरक्षा में रहे ... हमें विश्वास है कि हमारे कई पाठक हमसे सहमत होंगे, की उस दुष्ट की शक्ति से हमें बचाने के लिए प्रभु के विशेष प्रावधान वर्तमान सच्चाई है, जिसकी उन्होंने वॉच टॉवर प्रकाशनों के माध्यम से बड़े पैमाने पर आपूर्ति की है। **4253,C1,P2,3** आमीन

2 कुरिन्थियों 4:8-10 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नष्ट नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।

और इसलिए जीवन के क्लेशों को हमें संकट में डालने की अनुमति नहीं देनी है, जिस प्रकार से ये क्लेश दूसरे लोगों को संकट में डालते हैं। हमारे पास कुछ ऐसा है जो दूसरों के पास नहीं है - प्रभु का आश्वासन, कि यदि हम विश्वासी रहें, तो हमारे जीवन में सब कुछ हमारे लिए आशीष लेकर आएगा। अगर हम वास्तव में अपने पिता के वचन के इस वादे पर विश्वास करते हैं, तो यह हमें क्लेश में आनन्दित होने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रभु के काम में लगे हुए हैं, वे कुछ बातों में निरुपाय होते हैं। लेकिन प्रभु के लोगों की चिंता या अनिश्चितता कभी भी निराशा तक नहीं जानी चाहिए। जो लोग दुनिया के हैं, किसी कार्य से बाहर निकलकर और विभिन्न कठिनाइयों में पड़कर, बहुत निराश हो जाते हैं। अक्सर हम आत्महत्याओं के बारे में सुनते हैं। चीजें उन लोगों के लिए बहुत अंधकारमय होती हैं जो अपनी खुद की जिंदगी लेते हैं। यह प्रभु के लोगों के बारे में भी सही हो सकता है कि चीजें बहुत अंधकारमय दिखेंगी; लेकिन चाहे जो भी आ जाये, वे निराश नहीं होते हैं; क्योंकि प्रभु ने कहा है कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही कभी हमें त्यागेंगे। यह अनुग्रहित वादा हमें एक पक्की और दृढ़ आशा देता है। हमारी आशा की लंगर को हमें दृढ़ता से पकड़ के रखना है। **R**5670,**C**2,**P**6; **R**5671,**C**1,**P**2,3 आमीन

2 कुरिन्थियों 4:17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।

हालाँकि एक महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा मसीह की देह के सभी चुने हुए सदस्यों, जो अभी स्वर्ग में धन इकठ्ठा कर रहे हैं, की मीरास होनेवाली है, प्रेरित इस वचन में स्पष्टता से दर्शाते हैं की उस धन को वर्तमान समय के विचित्र परीक्षाओं के अंतर्गत विशेष उत्साह और विश्वास के साथ बढ़ाया जा सकता है। **R1821,C1,P3**

जब हमें याद आता है कि जितना हम वर्तमान परीक्षाओं और अनुभवों और कष्टों में प्रभु के करीब आते हैं ... भविष्य में भी हम उनके उतने ही करीब होंगे, तब हमें इस वचन में प्रेरित की अपने से सम्बंधित कड़ी परीक्षाओं के विषय में कही हुई बातों का मतलब समझ में आता है कि - हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। **R3362,C2,P5** आमीन

2 कुरिन्थियों 5:1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है।

हमारी स्थिति दुनिया से बहुत अलग है, जिनके पास कोई ख़ास आशा नहीं है। दुनिया के पास कोई ठोस लंगर नहीं है, न ही कोई बहुमूल्य वादे हैं कसकर पकड़ने के लिये। हम जानते हैं कि, अगर बुरा से बुरा भी आता है, तो हम भुखमरी से मर जायेंगे, लेकिन हमारी आशा पर्दे के उस पार है। इसीलिए आज के दिन , परमेश्वर के संत लोग, मृत्यु को अपनी सभी आशाओं और खुशियों

की प्राप्ति में जीवन की पूर्णता में प्रवेश करने के लिए प्रवेश द्वार के रूप में देखते हैं। R5671,C1,P3आमीन

2 कुरिन्थियों 6:18 और मैं तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।

क्या वादा है ! क्या सुझाव है ! - कि हम, जो स्वभाव से अशुद्ध और अपरिपूर्ण हैं, उनपर न केवल हमारे परमप्रधान रचयिता परमेश्वर की दृष्टि पड़ी, बल्कि उन्होंने हमें अपनी संतान बनने के लिये न्योता भी दिया और हमारे लिये अपने पितृत्व स्नेह का आश्वासन भी दिया - की "जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।" यह कितना अद्भुत लगता है! और फिर, किसी अन्य स्थान पर प्रेरित यह कहते हैं की, यही मामले का अंत नहीं है, बल्कि महज एक आरम्भ है, क्योंकि प्रेरित कहते हैं की, "और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं। "R5739,C2,P2 आमीन

2 कुरिन्थियों 9:8 और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

प्रभु से सराहना पाने के लिये, हमें इस अहसास से प्रेरित होकर की, जिनके पास से हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान आता है, उनके प्रति

हम अनन्तकाल तक धन्यवाद देते रहने के ऋणी हैं, हमें अवश्य धन्यवाद - बलि चढ़ाते रहनी चाहिए। और ऐसे लोगों के लिये प्रेरित आश्वस्त करते हैं की, "परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है"। जो कोई भी दिव्य सेवा में कुछ भी देता है - समय, प्रतिभा, शक्ति, धन या प्रभाव - वह खुद को उसी अनुपात में अलग-अलग अनुग्रहों में बहुतायत से बढ़ता हुआ पायेगा, क्योंकि ऐसे लोगों का हृदय अनुग्रह में बढ़ने के लिये सही दृष्टिकोण रखता है। इस वचन में प्रेरित यह कहते हुए प्रतीत होते हैं की, ऐसे लोगों के पास हर बात में और हर समय, सब कुछ, जिनकी इन्हें आवश्यकता है, वह उनके पास रहेगा और इनके पास "हर एक भले काम के लिये बहुत कुछ होगा"। सब कुछ होने का मलतलब भोग-विलास और हर प्रकार का आराम नहीं है; बल्कि जहाँ "संतोष सहित भक्ति" होती है वहीं सब कुछ जिसकी हमें आवश्यकता है उसको हमेशा प्राप्त किया जा सकता है। **R**5927,**C**2,**P**2,3 आमीन

2 कुरिन्थियों 12:9 मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।

प्रभु की इस सलाह को यदि बार-बार याद किया जाये, तो यह आशीष लेकर आयेगी और विरोधी शैतान के हमलों से राहत देगी, जो की प्रसन्नतापूर्वक हमें यह विश्वास दिलाना चाहता है कि, हमारी न टाले जा सकने वाली कमजोरियां और अपरिपूर्णताएं इस बात का प्रमाण हैं कि हम प्रभु के नहीं हैं। हमारे सामने संसार, शरीर और शैतान के घेराव से लड़ने के लिये, इस सलाह के साथ हममें क्या सामर्थ्य होनी चाहिये। इस वचन की सलाह को यदि याद रखा जाये, तो लालसा के क्षण में, यह हमारे मन को प्रभु की ओर ऊपर उठाकर प्रार्थना में "आवश्यकता के समय हमारी सहायता के लिये अनुग्रह" माँगने की ओर ले

जायेगा। प्रभु चाहते हैं की हम अपनी कमजोरियों और अपरिपूर्णताओं से सबक सीखें और परेशानी के समय सहायता और सामर्थ्य पाने के लिए परमेश्वर के पास जाना सीखें - आवश्यकता से पहले नहीं , बल्कि "आवश्यकता के समय", हर एक क्लेश के समय। **R2241,C2,P2** आमीन

गलातियों 3:29 और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

"मसीह का होना", इसलिए, जाहिर है कि विश्वास, आदर और अच्छे समर्थन से अधिक एक बड़ा सौदा है। इसका मतलब है मसीह का होना; - मसीह की देह, प्राण और आत्मा होना; - आज और सदा के लिये मसीह का होना; मसीह का दास होना, उनकी इच्छा उनके तरीके से उनके समय में करना; जब सुविधाजनक और सुखद हो तब भी और जब असुविधाजनक, दर्दभरा और कठिन हो तब भी। इसके अलावा इसका मतलब यह भी है की, इस पूर्ण अर्थ में हम किसी और के नहीं हो सकते, क्योंकि कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। यहां उन लोगों के लिए एक कठिनाई आती है जो गुप्त रूप से या अन्य संस्थाओं के सदस्य होते हैं। इन अन्य संस्थाओं के कानून, पेशे और रीति-रिवाज का मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ विरोध होना और उस समर्पण में बाधा डालना लगभग निश्चित है। R1697,C1,P1आमीन

इफिसियों 2:10 क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में भले कामों के लिये सृजे गए।

पर्दे के उस पार इन जीवित पत्थरों को एक साथ लाना पुनरुत्थान की सामर्थ्य से होगा, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण राजा सुलेमान के मन्दिर के निर्माण में मिलता है। जिसके बारे में हम पढ़ते हैं की यह मन्दिर ऐसे पत्थरों का बनाया गया, जो वहां ले आने से पहले खदान में गढ़कर ठीक किए गए थे, और ये पत्थर इतनी अच्छी तरह से आकार दिये गए थे और चिन्हित किये गए थे, की मन्दिर के बनते समय हथौड़े वसूली या और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द भी सुनाईं नहीं पड़ा। इन पत्थरों को लगाते समय कोई भी सुधार या परिश्रम नहीं करना पड़ा था। इसीलिए सन्त पौलुस कहते हैं की कलीसिया परमेश्वर की रचना है। और परमेश्वर का यह कार्य इतनी सिद्धता के साथ पूरा होगा की पर्दे के उस पार किसी भी सुधार या बदलाव की कोई आवश्यकता नहीं होगी। यह ऐसा दृष्टिकोण है जो प्रभु के लोगों के लिए विशेष रूप से दिलचस्प और लाभदायक है। उनमें से ऐसे लोग, जो यह महसूस कर सकते हैं कि उन्हें परमेश्वर के द्वारा इस ऊपरी बुलाहट में बुलाया गया है, मन्दिर का सदस्य बनने के लिये, वे लोग ही जीवन के क्लेशों और परेशानियों की आवश्यकता की पूरी तरह से क़द्र कर सकते हैं, जो की उन्हें स्वर्गीय महिमा, आदर और अमरता के लिये आकर दे रहे हैं और फिट कर रहे हैं। R5713,C2,P6,7 आमीन

फिलिप्पियों 1:6 और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।

आइये हम यह नहीं भूलें कि यह काम प्रभु का है, इस अर्थ से की परमेश्वर ने जो सामर्थ्य हमें प्रदान की है वो निश्चय इस काम को पूरा करने में

सामर्थी है, और यह भी की जिस ने हममें अच्छा काम आरम्भ किया है, वह उसे पूरा करने में सक्षम है; और वह ऐसा करेंगे भी, यदि हम उनको करने दें, यानि यदि हम उनके मार्गदर्शन का अनुकरण करें, उनकी इच्छा को करते हुए। **R**2124,**C**1,**P**1

लेकिन तुलनात्मक रूप से देखा जाये तो कितने कम मसीही हैं, जिनके पास पुरे विश्वास का दृढ़ आश्वासन है ... थोड़े से मसीही, जो कि प्रेरित के द्वारा कहे गए इस वचन के साथ पूरी तरह से सहानुभूति रखते हैं ... उनके पास इसके कारण बड़ा आनंद, बड़ी आशीष, हृदय का बड़ा विश्राम होता है, जो कि दूसरों के पास नहीं होता है। R2642,C1,P4 आमीन

फिलिप्पियों 2:13 क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

पमेश्वर इन बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं और महिमामय आशाओं और इनामों के द्वारा जो इनसे जुड़े हैं, अपनी सुइच्छा निमित्त हमारे मन में इच्छा और काम दोनों करते हैं, लेकिन वह हममें कितना काम करेंगे और इन वादों के माध्यम से जो परिणाम आएगा, वह हम पर निर्भर करता है ... हम उनके वादे के वचन की उपेक्षा कर सकते हैं, अनुग्रह के विभिन्न साधनों की उपेक्षा कर सकते हैं, जिसे परमेश्वर सत्य के ज्ञान और अनुग्रह में हमारी मजबूती, स्थापना और बढ़ोतरी के लिए देते हैं। और इस प्रकार परमेश्वर के प्रावधानों की उपेक्षा करने के कारण हम उनके प्रेम का पालन करने में असफल रहेंगे - उनके द्वारा वादा किए गए

अनुग्रहों को प्राप्त करने में असफल रहेंगे। प्रेरित ने यह कहते हुए सूचित किया है कि: - "अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो।" यहूदा 1:21 R3021,C2,P2 आमीन

फिलिप्पियों 4:7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी।

इस वचन में प्रेरित मन और हृदय के बीच में अंतर करते हैं। हृदय हमारे लगाव को दर्शाता है। प्रेरित न केवल यह विनती करते हैं कि हम किसी मामले में अच्छी भावनाएँ रखें, बल्कि यह भी कि हमारे मन में विश्राम होना चाहिये। यह वचन हमारी अपनी शान्ति की ओर संकेत नहीं करता है, बल्कि परमेश्वर की शान्ति के बारे में बताता है, जो शान्ति परमेश्वर की सामर्थ्य, उनकी भलाई और हमें अपने बच्चे की तरह अपने दाहिने हाथ से सम्भाले रखने की उनकी इच्छा को महसूस करके हमें मिलती है। यह शांति, पहरेदार के रूप में, प्रत्येक विरोधी या चिंतनीय विचार या भय को चुनौती देने के लिए, लगातार पहरा देने के लिये खड़ी रहती है। यह शान्ति मसीही के मन को इतने अच्छे से सुरक्षित रखती है की उसका हृदय प्रभु के साथ मेल-मिलाप, उनकी संगती और उनसे बातचीत में बना रहता है; और यह शान्ति उसके मन और विवेक को भी सुरक्षित रखती है, और उसे सिखाते रहती है और परमेश्वर के दिव्य सामर्थ्य, ज्ञान और प्रेम के बारे में आश्वस्त करते रहती है। R4898,C1,P3,4 आमीन

फिलिप्पियों 4:9 जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।

कितने (कितने कम हैं) ऐसा कह सकते हैं जो की प्रेरित इस वचन में कह रहे हैं ?... यह प्रत्येक मसीही का स्तर होना चाहिए, क्योंकि उनमें से प्रत्येक और सभी प्रभु के प्रतिनिधि हैं, उनके लिए राजदूत हैं; इसलिए, जितना उनसे हो सके, उनके आचरण और शब्द ऐसे होने चाहिए, की वे जीवित पत्रिका की तरह हों, जो भाइयों के द्वारा पढ़े जाएँ और दुनिया को लाभ पहुँचाएँ। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, कि प्रेरित इस वचन में, ऐसा करने वालों के लिये कहते हैं की, "तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।" इसीलिये जैसे निश्चित रूप से परमेश्वर प्रेरितों के साथ थे, वैसे ही वे उन सभी के साथ भी होंगें जो प्रेरितों के समान प्रभु यीशु के पदचिन्हों पर चल रहे हैं। R3129,C2,P1 आमीन

फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।

न तो आत्म-विश्वास और न ही आत्म-निर्भरता सबसे वांछनीय है, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा और उनके द्वारा "आवश्यकता के समय हमारी सहायता के लिये अनुग्रह" देने के वादे पर निर्भरता होनी चाहिए। यह मनचाही विनम्रता और दीनता को बनाए रखता है, और फिर भी प्रेरित के वचनों के द्वारा सुझाए गए साहस और बल को देता है कि: "मसीह जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।" जैसा की सन्त

पौलुस फिर से ऐलान करते हैं, "हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है!" इस प्रकार से परमेश्वर में और उनके वादों में विश्वास के द्वारा प्रेरणा पाकर, वे लोग जो "परमेश्वर की ओर से सिखाये हुए हैं", अद्भुत रीती से "प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में बलवन्त" बन जाते हैं। (इफिसियों 6:10) धर्मी सिंह की तरह बलवंत होता है, यह कहते हुए की, "मैं न डरूंगा, मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।" मैं इस बात पर ध्यान नहीं दूंगा कि आदमी मुझसे क्या कह सकता है या मेरा क्या कर सकता है। जब तक मेरे पास सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता मेरे पिता के बदले में हैं और मेरे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु बड़े भाई के बदले में हैं, मैं उनके "बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं" पर निर्भर करते हुए संतुष्ट रहूँगा। R5113,C2,P5,6 आमीन

फिलिप्पियों 4:19 और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

क्या महिमामय वादा है जिसे पौलुस ने अपनी फिलिप्पियों ... को लिखी पत्री में दर्ज किया है ...यह एक दिव्य वादा है, जिसे निभाने के लिए किया गया है। मैं इस वादे को आराम से वहां रख सकता हूँ जहाँ मैं अपने अमरीकी बांड को रखता हूँ, इस बात से निश्चित होकर की कोई भी धोखा नहीं होगा। यह वचन स्वर्ग के "सरकारी सुरक्षा पत्रों" में से एक है। यह मेरे परमेश्वर हैं जिन्होनें यह वादा जारी किया है; मेरे अपने निजी पिता। परमेश्वर मुझे वह सब देने के लिए बाध्य नहीं हैं जिनकी मैं अभिलाषा

करूँ; न ही वह सब कुछ जिसके लिए मैं प्रार्थना करूँ। मेरे बहुत सी इच्छाएँ पूरी तरह से बनावटी हैं, और स्वार्थ से पैदा हुई हैं। मैं धन की लालसा कर सकता हूं, और परमेश्वर यह देख सकते हैं कि अगर मैं गरीब होता तो मेरी आत्मा और अधिक समृद्ध होती। मैं कुछ पदोन्नति माँग सकता हूं, और परमेश्वर जानते हैं कि पवित्रता की ओर मेरा मार्ग अपमान और निराशा की तराइयों के माध्यम से है। इसलिए परमेश्वर मुझे केवल वही देने के लिए सहमत हैं जिसकी मुझे आवश्यकता है, जो कि मेरी लालसाओं से बहुत अलग हो सकती हैं। (BY T. L. CUYLER) R572,C1,P7 आमीन

कुलुस्सियों 2:10 तुम उसी में भरपूर हो।

एक शुन्य का अकेले में कोई मूल्य नहीं पर जब उसे किसी अंक से साथ जोड़ दिया जाये तो वह सचमुच में एक शक्ति है; और हमारे साथ भी वैसा ही है जब हम मसीह के पीछे हो लेते हैं या उनसे जुड़ जाते हैं - मसीह के बलिदान का मूल्य हमें परमेश्वर के साथ संगती और सहयोग देता है; यह हमें परमेश्वर और उनके कारणों के लिये वजन और प्रभाव और सामर्थ्य देता है। "तुम उसी में भरपूर हो;" "हमें उस प्रिय में स्वीकार किया गया है"। R3149,TOP आमीन

कुलुस्सियों 3:4 जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।

परमेश्वर उन लोगों से विशेष रूप से आनन्दित होते हैं जो परमेश्वर की इच्छा करके प्रसन्न होते हैं, और जिन्हें सही और गलत की क़द्र कराने के लिये चाबुक की जरूरत नहीं होती है। इन लोगों को परमेश्वर "जयवंत" बुलाते हैं। इन लोगों के पास प्रभु की समानता है ... और इन्हें जहाँ प्रभु हैं वहाँ उनके साथ होने के योग्य माना जाता है और उनकी महिमा, आदर, राज्य और सामर्थ्य को बाँटने के योग्य माना जाता है। ऐसा इसलिए नहीं है की जयवंत श्रेणी की "छोटी झुण्ड" के लोगों को इनाम इसलिए मिलेगा क्योंकि वे क्लेश के संतों यानि बड़ी भीड़ की तुलना में ज्यादा दुःख उठाते हैं, बल्कि केवल इसलिए है क्योंकि वे ख़ुशी से, स्वेच्छा से, आत्म-बलिदान करते हुए दुःख उठाते हैं। R1669,C1,P7,8 आमीन

1 थिस्सलुनीकियों 5:24 तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।

जो लोग माँगते हैं, उन्हें पवित्र आत्मा देना, और सभी बातों को मिलाकर उनकी भलाई के लिए बदल देना, और उन्हें महान मुख्य चरवाहे और अंततः राज्य के अन्दर लाना हमारे पिता को भाता है। दूसरे शब्दों में, "तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा" - परमेश्वर वह सब करेंगे जिसे करने का उन्होंने वादा किया है, जितना हमने उनसे माँगा है या उम्मीद की है, उससे कहीं अधिक बहुतायत से करेंगे। पूरा मामला हमारे साथ है: यदि हमारा समर्पण हमारे प्रभु के छुटकारे के काम में

विश्वास पर आधारित है, यदि यह पूरा और सम्पूर्ण समर्पण है, और यदि हम इसे दिन-प्रतिदिन जीते हैं, तो जितनी हम उम्मीद करते हैं वह सब और उससे भी कहीं अधिक परिणाम हमारे लिए होगा।

R3659,C2,LAST P आमीन

2 थिस्सलुनीकियों 3:3 परन्तु प्रभु सच्चा है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा: और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा।

दानिय्येल भविष्यद्वक्ता कहते हैं की विशेषकर इन अंत के दिनों में, "बहुत लोग निर्मल और उजले किये जायेंगे, और स्वच्छ किये जायेंगे और परखे जायेंगे;" और मलाकी इस समय की परीक्षाओं की तुलना "सोनार की आग" और "धोबी के साबुन" से करते हैं, जिसे प्रभु के लोगों को साफ़ और शुद्ध करने के लिए रचा गया है। प्रेरित पौलुस विनती करते हैं की हम विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ें और विपत्तियों को अंत तक धीरज से सहें। भजन संहिता और अन्य वचनों में कई सांत्वना और आराम के आशीषित वचन हैं जो परमेश्वर के दुःखियारे और अंधी के सताए हुए लोगों को आशीषित आराम और सांत्वना देते हैं। इन वचनों को पढ़ें - भजन - संहिता 77:1-14;116:1-14;34:19;31:24;2 थिस्सलुनीकियों 3:3
R1823,C2,P1 आमीन

2 तीमुथियुस 1:7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

एक मसीही में डर की भावना संदेह की भावना है, और विश्वास की कमी, पवित्र आत्मा की कमी को दर्शाती है। आत्मिक मामलों में, मसीही की उन्नति से सम्बंधित हर मामले में, व्यक्तिगत रूप से और कलीसिया के लिए भी, भय की आत्मा बुराई का एक फलदायक स्रोत है और यह शारीरिक कमजोरियों और अक्षमताओं के साथ नजदीकी से जुड़ी है। परमेश्वर का बच्चा जो पवित्र आत्मा से भरा है, अपने स्वयं के प्राकृतिक देह की तुलना में विशालकाय है; क्योंकि उसका डर दूर हो जाता है, उसका हृदय स्थापित है, उसका विश्वास जड़ पकड़कर मजबूती से टिका है, और उसकी आत्मा पर्दे के भीतर निश्चित और स्थिर है। इस प्रकार से जब मुसीबत की तूफानी हवाएँ चलती हैं तो उसे विपत्ति की चट्टानों पर चलने से रोक दिया जाता है। पवित्र आत्मा इस प्रकार उन लोगों के लिए एक शक्ति है जिनके पास यह है, जो अक्सर अपने दुश्मनों को चकित कर देती है। E249 आमीन

2 तीमुथियुस 2:11,12 यह बात सच है, कि यदि हम उसके साथ मर गए हैं तो उसके साथ जीएंगे भी। यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे: यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह भी हमारा इन्कार करेगा।

अन्य लोग जीवन की परीक्षाओं को दिव्य अकृपा के प्रमाण के रूप में लेते हैं, और यह महसूस करने में असफल हो जाते हैं कि वे हमारे चरित्र को आकार देने और चमकाने के लिए प्रभु के द्वारा तैयार किए गए हैं और इस प्रकार से हमारे लिए बहुत ही बड़ी और अनन्त महिमा उत्पन्न करते

जाते हैं। उनकी गलतफहमी के कारण उन्हें जीवन के अनुभव के द्वारा, जिसके माध्यम से होकर जाने के लिए बुलाया जाता है, उन्हें कम लाभ होता है - वे छड़ी को तो महसूस करते हैं, लेकिन इसके पीछे के प्रेमपूर्ण उद्देश्य को समझ नहीं पाते, जिससे की वे इच्छित पाठ को सीखने में असफल होते हैं .... यह पर्याप्त नहीं है कि हमने अनुभवों की नदी में से कुछ स्वाद लिया है, कि हमने आज्ञापालन के बारे में कुछ सीखा है ...कुछ परीक्षाओंको सहन किया, कुछ अवसरों पर हमने दुःख उठाकर उन चीजों के माध्यम से आज्ञापालन सीखा जिन्हें हमने सहा है; हमें अनुभव की इस नदी का जल तब तक पीते रहना चाहिए जब तक हम ख़ुशी से यह नहीं कह सकते - कि पिता मेरी नहीं, आपकी इच्छा पूरी हो ! R2936,C1,P4,2 आमीन

2 तीमुथियुस 2:19 प्रभु अपनों को पहचानता है।

परमेश्वर उनको खोज रहे हैं जो अपने आप को नम्र करते हैं, जो इस सच्चाई को किसी भी कीमत पर लेकर आनन्दित होते हैं, और जिनके ह्रदय लम्बे समय से इस सच्चाई के लिए भूखे और प्यासे हैं, और जो चरवाहे की आवाज़ को जानते हैं, और जो, इस सच्चाई के सन्देशे में वह पाते हैं जो, "उनकी अभिलाषा को इस प्रकार से संतुष्ट करता है, की और कुछ ऐसा नहीं कर पाता है"। ये लोग आनन्दित होकर आत्मिक युद्ध के हथियार को स्वीकार करेंगे और परमेश्वर के विश्वासी बच्चे की तरह इसे अपना बना लेंगे -- और इसे पहन लेंगे। इन लोगों को परमेश्वर सुरक्षित रखेंगे, जबकि अन्य लोग गिर जाएंगे। R4439,C1,P1 आमीन

2 तीमुथियुस 3:12 पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।

यह वादा पवित्रशास्त्र का आश्वासन है। हमें ताड़ना को निमंत्रण नहीं देना है, बल्कि अपनी वफादारी के इस सबूत की चाहत करनी चाहिए, और उन "धन्य लोगों" में होने की इच्छा रखनी चाहिए, जिसके बारे में प्रभु मत्ती 5:11 वचन में बोलते हैं -- "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करे, और सताए"। R5544,C1,P7 आमीन

इब्रानियों 1:14 क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पाने वालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं?

यह महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक मसीही को अपनी समझ की आंखें खोलनी चाहिए, ताकि वो विश्वास के द्वारा वह देख सके जो कि एलिशा और उसके दास को शारीरिक आँखों में दिखाया गया था। परमेश्वर ने हमारे लिए जो अद्भुत प्रावधान किए हैं उन्हें, और हमारी सुरक्षा के लिए उनकी सामर्थ्य को देखने के लिये, इस सुसमाचार के युग के दौरान प्रभु हमारी स्वाभाविक आँखें नहीं खोलते हैं; लेकिन इसके बजाय वह हमें अपने अनुग्रह और सच्चाई के वचन के माध्यम से इस विषय का बेहतर ज्ञान देते हैं, ताकि हम विश्वास के द्वारा चलने में सक्षम हों और रूप को देखकर नहीं चलें; वचनों का यह ज्ञान और उसपर विश्वास हमें यह देखने के लिए सक्षम करता है कि प्रभु की सेनाएँ हमारे चारों ओर छावनी किए हुए हैं और यह पहचानने में मदद करता है की वे स्वर्गदूत हमारी

स्वाभाविक दृष्टि के सामने कोई चमत्कार किए बिना हमारी सुरक्षा करते हैं। हम में से कोई भी पर्याप्त रूप से ऐसी सहायता के बिना मसीही युद्ध के दौर से गुजरने के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत नहीं है जैसा की प्रभु ने प्रदान किया है, और जिसे एक मसीही विश्वास के द्वारा देखता है, स्वीकार करता है, पकड़ता है, उसपर विश्राम करता है और जिसके द्वारा वह मजबूत किया जाता है। R2350,C1,P1 आमीन

इब्रानियों 3:14 क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

असंतोष की भावना दिव्य प्रावधान के स्वर्गीय मन्ना से दूर देखते हुए अपने स्वयं के प्रावधान के अन्य भोजन या अन्य सांसारिक आपूर्ति के लिए चाहत रखती है। और प्रभु वैसे लोगों को जिसकी वे चाहत रखते हैं, उसपर पूरी तरह से भोज करने के अवसर की अनुमति देते हैं ... बाइबल हमें दिव्य सच्चाई का मन्ना देता है। इस सच्चाई के मन्ना को इकठ्ठा करने, पीसने और पकाने की आवश्यकता है, यानि की उसे समझने और उसे अपने जीवन में लागु करने की जरुरत है, और यह सच्चाई केवल परमेश्वर के प्रावधानों के द्वारा ही मिलती है। यह सच्चाई पूरी और पौष्टिक है, ये बिलकुल वही महत्वपूर्ण आत्मिक भोजन है, जिसकी हमें परमेश्वर के बच्चों के रूप में, हमारी मजबूती और परिपूर्णता के लिये आवश्यकता है। पर फिर भी कुछ हैं जो इस्राएलियों की तरह मिस्र देश के मांस की हांडियों यानि दुनिया के सिद्धांतों की लालसा रखते हैं। तब परमेश्वर उन दुनिया के सिद्धांतों को उन तक पहुँचने की अनुमति देते हैं। वे लोग खुद को उच्च आलोचना और विकासवादी सिद्धांतों से भर लेते हैं, और इस तरह से वे नई सृष्टि के रूप में नष्ट हो जाते हैं, परमेश्वर के लोगों में नहीं रहते, स्वामी के पदचिन्हों पर नहीं चलते। वैसे लोग उस आग, या बुखार में

भस्म हो जाते हैं, जो बुराइयाँ जिसकी वे लालसा करते हैं पैदा करती है। R5306,C2,BOTTOM; R5307,C1,P1 आमीन

इब्रानियों 4:16 इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

लेकिन आवश्यकता के समय हमारी सहायता को पाने के लिए यह जरूरी है की हम प्रार्थना में इस सहायता को पाने के लिए विनती करें। प्रत्येक दिन और प्रत्येक घंटा वास्तव में एक आवश्यकता का समय है; इसलिए हमें प्रार्थना के माहौल में जीने की जरूरत है - निरन्तर प्रार्थना करते रहें। R1802,TOP

जो लोग प्रभु के सच्चे लोग हैं, वे अपनी असफलताओं पर इतने दुखी महसूस करते हैं कि वे तुरंत अनुग्रह के सिंहासन की ओर अग्रसर हो जाते हैं, ताकि वे दया प्राप्त कर सकें और भविष्य में आवश्यकता के समय सहायता पाने के लिए जरूरीअनुग्रह को पा सकें, लेकिन अन्य लोग अपनी असफलताओं को हल्के में लेते हैं और उसके अनुसार लाभ पाने में असफल हो जाते हैं .... समर्पित लोगों के मन की भावना को एक कवि के द्वारा अच्छे से व्यक्त किया गया है, जो कहते हैं:

“ओह, पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले कोई भी बादल

आपके दास को आपकी आँखों से छिपा न दे!" R3407,C1,TOP; P1 आमीन

इब्रानियों 6:19 वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता है।

"पवित्र स्थान" में से आत्मिक मानसिकता रखने वाली नई सृष्टि, विश्वास के द्वारा "पर्दे" की दरार के माध्यम से, "अति पवित्र स्थान" की ओर देखती है, उस महिमा और अमरता की झलक को पकड़ती है, जो इस शरीर के परे है; जिसकी आशा हमारे प्राण के लिए एक लंगर है, पक्की और दृढ़ है, और यह आशा हमें वहाँ प्रवेश कराती है जो कि पर्दे के उस पार है। T21,P2 आमीन

इब्रानियों 10:23 और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें; क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है।

यहाँ प्रेरित का तर्क यह है की हम अपने उस विश्वास को दृढ़ता से थामें रहें जिसने हमारे मसीही जीवन को आरम्भ किया और जो हमारे मसीही जीवन को पूरा भी करेगा। प्रभु हमें साथ लेकर चलने में सक्षम हैं और वह ऐसा करेंगे भी, यदि हम अपना हिस्सा करेंगे। लेकिन जिन शर्तों पर प्रभु ने हमें स्वीकार किया है, वे ये हैं कि हमारा उद्देश्य विश्वासी बने रहना होना चाहिए। इसलिए सब कुछ हमारे द्वारा अपने उस विश्वास को जिसे हमने अपनाया है, दृढ़ता से थामें रहने पर निर्भर करता है, बिना संदेह के, किसी भी संदेह और भय को शरण दिए बिना; और अंततः इस विश्वास के आधार पर हम जय पाएंगे यह आश्वासन हमें इन वचनों से मिलता है की "जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है"। हम जानते हैं की बाइबल में हमारे लिये "बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ" हैं ... इसलिए यदि हम विश्वास को दृढ़ता से थामें रहें, तो हम वो सब पा सकते हैं जिसका वादा परमेश्वर ने हमसे किया है। परमेश्वर विश्वासी रहेंगे; वे अपने वादों की अवहेलना नहीं करेंगे; उन्होंने जो कहा है, वह सब करेंगे। R5698,C1,P5 आमीन

इब्रानियों 10:35 इसलिए अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।

क्या दुश्मनों का सरदार खुद का विरोध करते हैं - आपके रास्ते में बाधा डालते हैं, आपके प्रभाव में बाधा डालते हैं और क्या वे आपको निराश करते हैं आपकी निन्दा करके, और क्या परिस्थितियां आपके विरोध में षड्यंत्र कर रही हैं, आपके ह्रदय को सचेत करने और डराने के लिए? अपने प्राणों से कहें, "डरो मत," "परमेश्वर पर आशा रखो," और उनके प्रेम से भरे प्रावधानों पर ध्यान रखें - क्योंकि - "लहरों और बादलों और तूफानों के माध्यम से, परमेश्वर धीरे से आपका रास्ता साफ करते हैं,"- जब तक की इस तरह के अनुभवों के माध्यम से, परमेश्वर के साथ आशीषित जान - पहचान हमारे ह्रदय में उस सिद्ध प्रेम को न बढ़ा दे जो की भय को दूर करता है। फिर आप ज्यादा से ज्यादा पूरी तरह से विश्वास के धन्य विश्राम की आशीष में प्रवेश करेंगे, और जैसे उकाब पक्षी, तूफ़ान के बादलों के ऊपर उड़ता रहता है, वैसे ही मसीही अनुभव में हम भी और ऊंचाई के वातावरण में ही रहेंगे, जो की हमें प्रभु में हमेशा आनन्दित रहने में मदद करेगा और हर चीज़ में परमेश्वर को धन्यवाद देते रहने में सक्षम बनाएगा। R1906,C1,P3 आमीन

इब्रानियों 10:36 क्योंकि तुम्हें धीरज धरना आवश्यक है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

परमेश्वर की इच्छा क्या है? 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 वचन में ठोस रूप में बताया गया है की, "परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो".... जब हम अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित कर देते हैं, तब हम परमेश्वर की इच्छा

कर रहे होते हैं.... लेकिन वह हमें परीक्षा में डालने की इच्छा रखते हैं। हम परमेश्वर से कितना प्रेम करते हैं? हम कितने ईमानदार हैं? ... इसलिए हमारी वफ़ादारी परखी जाती है। हम मसीह के लिए क्या सहने को तैयार हैं? हम किस हद तक पूरी तरह से समर्पित हैं? हमारा समर्पण कितना गहरा है? क्या हम पूरी तरह से प्रभु की इच्छा से तालमेल में हैं? क्या हमारी रुचि महज ऊपरी है, या यह हमारे दिलों में पूरी तरह से प्रवेश कर चुकी है? सवाल केवल यह नहीं है की, क्या हम समर्पण करें? - लेकिन एक मसीही के द्वारा इन सभी प्रारंभिक क़दमों के उठाए जाने के बाद, वह किस हद तक धीरज से सहने को और आज्ञापालन और वफादारी को प्रकट करेगा? परमेश्वर हमें इन परीक्षाओं में इसलिए डालते हैं क्योंकि जो लोग जय पायेंगें उन्हें देने के लिए परमेश्वर के पास महान सम्मान है। वे लोग एक चुने हुए समूह के होंगें, और वे पमेश्वर के वादों को प्राप्त करेंगे। R5332, C1,P5-7; C2,P3 आमीन

इब्रानियों 12:6,7,11 क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है। तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता? और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

वह बताते हैं कि ऐसा अनुशासन क्रोध से प्रेरित नहीं है.... बल्कि उनके प्रेम के द्वारा प्रेरित है, और यदि हम इन अनुशासनों, परीक्षाओं और जीवन के अनुभवों को ठीक से अभ्यास में लायें, तो वे "हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करते जायेंगे;" इनके द्वारा हमारे में ऐसा चरित्र उत्पन्न हो पाएगा, की प्रभु

हमें सेवा के उन कार्यों में उपयोग में ला पायेंगे, जिनके लिये उन्होंने हमें बुलाया है.... जिनके पास पुत्रत्व की सच्ची आत्मा है, उन सभी का उचित उत्तर हमारे प्रभु और स्वामी के शब्दों में व्यक्त होता है, "मेरी इच्छा नहीं पर आपकी इच्छा पूरी हो," “हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्त:करण में बनी है"। जो लोग प्रभु की ताड़नाओं का उत्तर इस प्रकार से देते हैं, वे दिव्य अनुग्रह में अधिक से अधिक बढ़ते जाते हैं, और प्रभु से सांत्वना के, अनुग्रह के, मदद के वचनों को सुनते हैं। R3059,C2,P2 आमीन

इब्रानियों 13:5 उस ने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।

हमारे सर्वोच्च हित ... हमारे पिता की निरंतर देखभाल के मामले हैं। यदि हम प्रभु के बहुत निकट रहते हैं, तो हम गिरे हुए स्वर्गदूतों की शक्ति से सुरक्षित रहते हैं.... जहां तक हमारी नई सृष्टि के हितों का संबंध है, केवल विश्वास की कमी हमें किसी भी हद तक इन गिरे हुए स्वर्गदूतों की शक्ति के अधीन करेगी। वे न तो किसी भी तरह से हमारे शरीर को नुकसान पहुंचा सकते हैं और न ही हमसे किसी भी तरह की हिंसा कर सकते हैं, जब तक कि प्रभु इसकी हमारे सबसे अच्छे के लिए अनुमति न दें - संभवतः हमारे उद्धार और ऊँचे पद के लिए, जैसा कि उन्होंने हमारे स्वामी के मामले में किया था। जब ... पीलातुस ने ... हमारे प्रभु से उनकी गिरफ्तारी और मुकदमे की रात में कहा, "क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।" यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" वैसा ही स्वामी के सभी पदचिन्हों पर चलने वालों के साथ भी है। परमेश्वर का अनुग्रह ही इनके लिये

बहुत है। मनुष्य हमारे सिर के बालों को नुकसान पहुंचाने में भी शक्तिहीन है, जब तक कि उसे हमारे पिता की अनुमति, स्वर्ग में उनकी महिमा और हमारे अपने सर्वोच्च कल्याण के लिये न मिले। R5540,C1,P2; C2,P3 आमीन

इब्रानियों 13:6 इसलिये हम निडर होकर कहते हैं, "प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है"॥

एक मसीही की अवस्था इस दुनिया में बहुत विचित्र है। कोई भी अन्य व्यक्ति इतना साहसी और स्वतंत्र होने की कोशिश नहीं कर सकता जितना कि, एक मसीही। फिर भी परमेश्वर का सच्चा बच्चा आत्मनिर्भर नहीं है और न ही किसी बाहरी मदद से स्वतंत्र है। परमेश्वर का सच्चा बच्चा प्रभु के वचन से इतना प्रेरित है, न घमण्डी है, बल्कि नम्र मन का है, उसे पता है कि, वह खुद में शक्तिहीन है, और उसे परमेश्वर की कितनी आवश्यकता है। वाकई में, जब तक वह मन का नम्र न हो, वह परमेश्वर को नहीं भा सकता है। पर इसके साथ ही परमेश्वर के सच्चे बच्चे को साहस और विश्वास से भरा होना चाहिए। परमेश्वर की शक्ति का सामना पूरे ब्रह्माण्ड में और कोई भी नहीं कर सकता। और परमेश्वर ने वचनों में कहा है -- कि वे उनके बच्चों के लिए आश्रय और ढ़ाल है। परमेश्वर अपने बच्चों के लिए एक मजबूत किला हैं, जो अपना भरोसा उन पर रखते हैं। 5539,C1,P6 आमीन

याकूब 1:5,6 पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको

दी जाएगी। पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है।

परमेश्वर की दिव्य दृष्टि में विनम्रता की आत्मा स्वीकार योग्य है। ऐसा स्वभाव उनके लिए जरुरी है, जो वो ज्ञान जो ऊपर से आता है उसको ग्रहण करते हैं -- उन लोगों को नम्रता से अपने अन्दर की कमियों और बुद्धि की घटी को स्वीकार करना है, नहीं तो वे ये ऊपर के ज्ञान को मुफ्त में नहीं पा सकते हैं, परमेश्वर इस ज्ञान को उनको जिनका ह्रदय का नजरिया इस ऊपरी ज्ञान को ग्रहण करने का होता है, उनको प्रसन्नता से, अभी के समय में इस ऊपरी ज्ञान को देने में खुश होते हैं। और ये देखा भी जाएगा कि, नम्रता के मन का होना जरुरी है और यह संयम मन की आत्मा होने का मुख्य आधार है -- वो कौन होगा जो न्यायपूर्ण, उचित, बिना पक्षपात के सोचने की सही अवस्था में है, सिवाय इसके कि उनके पास एक विनम्र स्वभाव हो? इसलिए हम इस बात से सहमत होंगे कि मसीह का मन होने के लिए मन में विनम्रता का होना एक प्राथमिक गुण है। R2585,C2,P3 आमीन

याकूब 1:12 धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।

जैसा की प्रेरित कहते हैं, "दुःख रूपी अग्नि तुम्हें अवश्य परखेगी"। ये मामला आवश्यक है, अनिवार्य है, उन सभी लोगों के लिये, जो प्रभु यीशु

मसीह की पाठशाला से अभी के समय में डिग्री पाकर निकलेंगें, ताकि उनके महिमा वाले राज्य में सहभागी हो सकें -- इन सब को अवश्य परीक्षा में सफल होना होगा। आह, अगर हम ये विचार, लगातार अपने पास रख सकें, तो यह विचार हमें कैसे प्रभु की सेवा करने की इच्छा और उनको जो भाता है, वह करने में मदद करेगा -- जो कुछ भी हमारे प्रिय स्वामी हमारे लिये सर्वोत्तम समझकर उसकी अनुमति देते हैं, उन सब को विश्वासी और आनन्दित होकर सहने में मदद करेगा, यह जानते हुए की परमेश्वर हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न कर रहे हैं। इस दृष्टिकोण से, "हमारे क्लेश हमें कितने हल्के लगेंगे! परदेशी और यात्री का यह धरती पर का सफर कितना छोटा लगेगा!" R2793,C2,P3,4 आमीन

याकूब 4:6 परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।

स्वर्गीय पिता के अन्दर नम्र लोगों के प्रति गहरा प्रेम है। यही कारण है कि हमें अपने आप को नम्र करना है। क्योंकि हम पातें है कि, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करते हैं," और यह विनम्रता का गुण उचित रूप से धारण किए हुए चरित्र का एक मूल सिद्धांत है , इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ने की खोज में रहना है और उस नज़रिये को प्राप्त करना है जिसमें परमेश्वर हमें सबसे ज्यादा आशीष दे सकते हैं। R5843,C2,P1

सिर्फ नम्र मानसिकता के लोग ही उस सबसे बड़े पाठ को सीखने के लिए तैयार हैं, जिसको उन्हें उस ऊंचे पद तक पहुँचने के पहले सीखना है, जो उनके और दूसरों के लिए लाभदायक हो सकता है... प्रभु यीशु ने इसके विपरीत, उचित मार्ग का जो महिमा, आदर और अमरता की ओर ले जाता है, अपने जीवन के द्वारा हमें उदाहरण दिखाया है; ये मार्ग है खुद को नीचा करने का और परमेश्वर की दिव्य इच्छा के प्रति चाहे वो जो भी हो, खुद का पूरी तरह से समर्पण कर देना। R5847,C2,P3,4 आमीन

याकूब 4:8 परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।

आइए हम प्रभु के साथ अपनी जान पहचान को बढ़ाएं, प्रार्थना में प्रभु के निकट जाएँ, उनके बहुमूल्य वचन की पढाई में, उनकी सभी अच्छाईयों पर, उनकी दिव्य देखभाल पर, हमारे अपने व्यक्तिगत अनुभवों में उनके अनुग्रह की स्पष्ट अभिव्यक्ति पर, और उनके बहुमूल्य वादों पर ध्यान करते हुए जो की सब के सब मसीह यीशु में हाँ और आमीन हैं। इस प्रकार से "परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा"। वे अपने आप को हमारे सामने प्रकट करेंगे और हमारे साथ वास करेंगे। R1949,C2,P2 आमीन

1 पतरस 1:3,4 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया, अर्थात एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है।

क्या नश्वर मनुष्य इतनी भव्य महिमा की कल्पना कर सकता है? इतने ऊँचे बुलावे का विचार ही हमारे ह्रदय को हमारे परमेश्वर के सामने भूमि पर झुक कर दण्डवत करा देता है, इतनी बहुतायत में मिले अनुग्रह - सब सीमाओं से परे मिले आनन्द के प्रति हमारी प्रचुर अयोग्यता को हम महसूस करते हैं! हम प्रभु को क्या दे सकते हैं जो उनके वर्णन से बाहर किये गए अनुग्रह और कृपा के प्रति हमारी कृतज्ञता और धन्यवाद का उपयुक्त प्रदर्शन कर सके? निश्चित रूप से, जिसने हमसे इतना प्रेम किया, इतनी आशीषें दी हैं, हमें इतना आदर दिया है, उसके लिए किया गया सबसे विश्वसनीय सेवा का कार्य भी बदले में बहुत ही मामूली भेंट होगी। R5855,C1,P2 आमीन

1 पतरस 1:5 जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है।

परमेश्वर की सामर्थ (उनके वचन और दिव्य प्रावधानों)। R3282,C1,TOP

जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से की जाती है (उनके बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों और प्रावधानों के द्वारा जिनपर हम अपनी पकड़ बनाये रखते हैं)। R1007,C1,P2

जब हम मुश्किल में होते हैं, तो हमें दृढ़ विश्वास में ऊपर की ओर देखना होता है और प्रभु पर भरोसा करना होता है। हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा है कि हम उन पर विश्वास का अभ्यास करें। संत पतरस हमें बताते हैं की "हमारी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये" होती है। और इस कारण हम मगन होते हैं, "यद्यपि अवश्य है कि

अब कुछ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं" और लालसाओं "के कारण उदास हैं"। "तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है।" R5403,C1,P4 आमीन

1 पतरस 3:12 क्योंकि प्रभु की आंखे धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी विनती की ओर लगे रहते हैं॥

यदि हम उनमें से हों, जो ये दावा करते हैं कि हम पिता और उनके पुत्र की उपस्थिति में सर्वदा रहते हैं, इसीलिए हम परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास बहुत बार नहीं आ सकते हैं, क्या ये सही है? -- यदि हम उनसे प्रेम करते हैं और उनकी आज्ञाओं को मानते हैं...तो परमेश्वर के किसी भी बच्चे को उनके पास प्रभु यीशु के द्वारा जाने में हिचकिचाना नहीं चाहिए या उनके साथ वार्तालाप या भाईचारा करने में देरी नहीं करनी चाहिए...परमेश्वर के किसी भी बच्चे को उनके पास जाने में कोई डर नहीं होना चाहिए, या यह नहीं सोचना चाहिए की वे दूसरे महत्वपूर्ण मामलों में बहुत व्यस्त हैं, या वे हमारे लगातार उनके पास बार बार, छोटी चीज़ों के लिए जाने से ऊब जायेंगे। R1865,C1,P5,7; C2,P1 आमीन

1 पतरस 4:12,13 हे प्रियों, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझ कर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।

अगर हम वाकई में परमेश्वर के पुत्र और मसीह के सैनिक हैं, तो हमें पहले से सचेत किया जाता है कि, जो अग्नि रूपी परिक्षाएं हमारे को आएँगी उससे हमें आश्चर्य नहीं होना है। इन अग्नि रूपी परिक्षाओं की उम्मीद की जानी चाहिए और एक मसीह के सैनिक को इसका सामना करने के लिए ध्यान से तैयार रहना चाहिए। प्रेरित पतरस हमें बताते हैं कि, विश्वास की शक्ति के द्वारा ही हमें शैतान का विरोध करना है - "विश्वास में दृढ़ होकर, शैतान का विरोध करो"। और प्रेरित यूहन्ना भी यही विचार 1 यूहन्ना 5:4 वचन में व्यक्त करते हैं -- "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है"। विश्वास के द्वारा ही हमें परमेश्वर के बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों को पकडे रहना है और इन बहुमूल्य वादों की कदर करनी है। विश्वास के द्वारा ही हमें परमेश्वर की शक्ति को पकड़े रहना है और आवश्यकता के समय उनके अनुग्रह को खोजना है। R1859,C2,P5,6 आमीन

1 पतरस 5:7 अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

ये अनुभव जिसकी अनुमति परमेश्वर देते हैं, इसका उद्देश्य ही यह है कि, उनके लोगों का वे मार्गदर्शन करें, कि वे अपनी चिंता परमेश्वर पर प्रभु यीशु के द्वारा डाल दें, कि ये अनुभव उनको परमेश्वर के नज़दीक लाएं, उनको धीरज से सहना सिखाएं, ताकि वे देख पाएं कि उनको परमेश्वर की कितनी जरुरत है, परमेश्वर के बिना, वे खुद में कितने लाचार और दयनीय हैं... व्याकुलताएँ... हमसे हमारे में जो प्रभु की शान्ति है उसको चुरा लेती हैं-- हमें इन व्याकुलताओं को अपने आप को निराश करने नहीं

देना है पर इन्हें छोड़ देना है, लापरवाही के द्वारा नहीं, पर इस सोच के साथ की, प्रभु यीशु जो हमारे महान बोझ उठाने वाले हैं, उन्होंने हमें यह न्यौता दिया है, हाँ, हमसे विनती की है, हम अपनी सारी चिन्ता -- जो हमारी शान्ति को भंग करती है, उनपर डाल दें। प्रभु यीशु हमारे बोझ को हल्का कर देंगे और क्लेशों को आसान कर देंगे। यही विश्वास की परिक्षा है, और इस परिक्षा पर विजय, परमेश्वर के प्रेम और उनके बहुमूल्य वादों पर विश्वास के द्वारा मिलेगी। R5509,C1,P2,3 आमीन

2 पतरस 1:4 जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।

इन बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाओं के द्वारा यानि इनके प्रति आज्ञाकारी होकर... आह, कितना अद्भुत है कि हमारे महान सृष्टिकर्ता न केवल पापियों को छुटकारा दिलाने की कृपा दिखाते हैं बल्कि बहुत जोर देकर, उन्हें अपने इनामों और आशीषों को ग्रहण करने के लिए भी लुभाते हैं। R3059,C1,P4

परमेश्वर हमारे सामने उनके बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं को धीरे-धीरे खोलते हैं, जैसे-जैसे हम अपने आपको उनके प्रति विश्वासी साबित करते जाते हैं -- ताकि जो बल और साहस ये बहुमूल्य वादे हमको देते हैं -- इसके द्वारा हम दौड़ को इस तरह से दौड़ने के योग्य हो जाएँ की हम इनाम पा सकें। C220,P2 आमीन

2 पतरस 1:5,8 इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्‌गुण, और सद्‌गुण पर समझ बढ़ाते जाओ...क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देगी।

प्रेरित पतरस हमसे विनती करते हैं कि, परमेश्वर के बहुमूल्य वादों पर विश्वास के अलावा... जो हमारे अन्दर उत्साह को बढ़ाते हैं और हमें नया साहस देते हैं, हमें पूरा ध्यान रखते हुए अपने विश्वास पर सद्‌गुण, और सद्‌गुण पर समझ, आदि को बढ़ाना है।फिर प्रेरित पतरस, 2 पतरस 1:10 वचन में बोलते हैं, "क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे"। चरित्र के इन अनुग्रहों को स्थिरता से लगातार बढ़ाने से, ये हमारी आत्मिक दृष्टि को स्पष्ट करेंगे, और हमें परमेश्वर के सत्य को और अधिक अच्छे से पूरी तरह समझने में सक्षम करेंगे, और इस तरह से, "धामिर्कता के हथियारों से जो दाहिने-बाएं हाथों में हैं", हम, "विश्वास की ढाल लेकर दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को स्थिरता से बुझाने" और विश्वास की जय को जितने और अपने बुलावे और चुनाव को पक्का करने के योग्य हो जाएँगे। R1859,C2,P7,8 आमीन

2 पतरस 1:10,11 इस कारण हे भाइयों, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्‌ध करने का भली भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे तो कभी भी ठोकर न खाओगे; वरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्‌धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।

हम अच्छे तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि, जो भी परमेश्वर के राज्य के योग्य हैं उनको नहीं निकाला जाएगा। इनके बारे में लिखा है, "कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता;" और फिर कहा गया है, "क्योंकि यदि ऐसा करोगे (प्रभु की आवाज़ को ध्यान से सुनोगे और उनकी आत्मा को बढ़ाओगे और उनके मार्ग में चलोगे), तो कभी भी ठोकर न खाओगे (ऐसा करने से), और इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे"। R2257,C2,TOP आमीन

1 यूहन्ना 1:9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

ये चीज़ें इसलिए लिखी गयी हैं पवित्रशास्त्र में, ताकि हम अपने विचार को इस तरह न ले जाएँ ताकि जो गलतियाँ हम लापरवाही के द्वारा करते हैं, वो हम पर विजय पाले और वो गलतियां हम करते रहें...और फिर प्रभु के पास क्षमा के लिए जाएँ। पर इसके विपरीत, ये दिव्य समर्थन, आश्वासन है परमेश्वर की ओर से, कि वे इच्छुक हैं हमें क्षमा करने के लिए, ताकि ये हमको तनाव मुक्त कर दे और हमारे ह्रदय पर अच्छा प्रभाव हो, कि, हम पाप करने से सावधान रहें...हमें अपने मन की आत्मा में प्रभु के बहुत नज़दीक और उनसे संपर्क बनाए हुए रहना है, ताकि हम लगातार प्रभु से संगति बनाये रखें: और अपनी गलतियों को स्वीकार करके प्रभु से क्षमा की खोज करनी है, ताकि हम अपने सफर के अन्त तक पाप से साफ़ होते हुए आगे बढ़ते रहें, हालांकि फिर भी हमें अपने शरीर की कमजोरियों को

निश्चय स्वीकार करते रहना चाहिए। R2235,C2,P5; R2236,C2,P2 आमीन

1 यूहन्ना 2:5 पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है।

परमेश्वर के वचन को पाने के बाद, हमें उसे मानना है, इस नज़रिए से की हमें वचनों के प्रति पवित्र डर रखना चाहिए और उसके प्रति आज्ञापालन करना चाहिए। हमें अपने जीवन को क्रियाएँ को भी वचनों के मुताबिक नियंत्रित करने की कोशिश करनी चाहिए। जो परमेश्वर के वचन का पालन करेगा, वो इसके परिणाम में पायेगा की, उसमें परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है... हमारा मानना है कि, हमारे लिए परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को पाना सम्भव है। यदि सिद्ध प्रेम को पाने के लिये शरीर के परिपूर्ण कार्यों के आवश्यकता होती, तो हम इस सिद्धता को प्राप्त करने की अपनी क्षमता पर संदेह कर सकते थे। पर क्योंकि ये ह्रदय का मामला है, इसीलिये इस सिद्ध प्रेम को पाना सम्भव है; क्योंकि हम मन से शुद्ध हो सकते हैं... इसीलिये, परमेश्वर के इस प्रेम को हममें सिद्ध करने के लिये, हमारे पास उच्चतम स्तर का आदर्श होना चाहिए - यह की हमें बिलकुल वैसा ही प्रेम करना चाहिए जैसा प्रेम परमेश्वर करते हैं। R5276,C2,P3,5,6 आमीन

1 यूहन्ना 3:1 देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं: और हम हैं भी। इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।

यदि हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान दें, और इसकी सच्चाई को अच्छे, ईमानदार और समर्पित हृदय में ग्रहण करें, तो यह हममें परमेश्वर और उनकी योजना के लिये ऐसा प्रेम उत्पन्न करेगा, और बड़े आनंद के इस सुसमाचार को सुनाने और उसका प्रचार करने के लिये ऐसी चाहत उत्पन्न करेगा, की इसके बाद हम इस कार्य को हमारे जीवन में मगन होकर करेंगे; और फिर यह हमें न केवल संसार और कई नाम के ईसाईयों से मन की आत्मा में अलग करेगा, बल्कि वैसे लोगों से हमें पूरी तरह से अलग कर देगा। वे आपको विचित्र समझेंगे और आपको उनकी संगती से अलग कर देंगे, और आपको त्याग देंगे और आपको मसीह के लिए एक मूर्ख में गिना जाएगा; वे हमें नहीं जानते, क्योंकि वे प्रभु को भी नहीं जानते थे। A347,P1 आमीन

1 यूहन्ना 3:2,3 अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

हम और किसी सत्य के बारे में नहीं जानते जिसमें इस वचन से अधिक शुद्ध करनेवाला प्रभाव हो - "वो आशीषित आशा" - हमारे महिमामय प्रभु यीशु का प्रगट होना। यह आशा ही हमें शुद्ध करती है। 1 यहून्ना 3:3

वचन -- "जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है"...और कोई नहीं, पर जो ह्रदय से शुद्ध है, ईमानदारी से और सच्चाई से इस आशा की उम्मीद कर सकते हैं... आइये प्रिय भाइयों, हम अपने मन में अच्छे से रख लें, हमारे स्वामी का वादा जो उन्होंने किया था कि वे अवश्य वापस आएंगे, और अब जब प्रभु यीशु "अदृश्य रूप" में उपस्थित हैं (परोसिया), इसका पूरा प्रभाव हमारे हर एक शब्द और क्रिया पर हो; जी हाँ, हमारी सोच पर भी हो। आइये हम ये आशा करें की, हम जल्द ही अपने पुनरुथान के बदलाव का अनुभव करेंगे, और हमारे प्रिय उद्धारकर्ता के जैसे हो जाएंगे और उनको वैसे ही देखेंगे जैसे की वो हैं... इस आशा को हमारे ह्रदय को पूरी ऊर्जा से भर देना चाहिए, हमारे होठों को खोल देना चाहिए और हमको हमारे स्वामी और सच्चाई के घराने की हर एक सेवा करने के लिए बल, विशेषाधिकार और अवसर देना चाहिए। R3193,C2,P1,2,4 आमीन

1 यूहन्ना 4:4 क्योंकि जो तुम में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।

सेनाओं के यहोवा हमारे साथ हैं। उनके बहुमूल्य वादे, साथ ही उनके दिव्य प्रावधान, हमारे चारों ओर उपस्थित उद्धार की शहरपनाह और सुरक्षा है। मसीह में परमेश्वर के प्रेम से हमें क्या अलग कर सकता है? क्या क्लेश हमें अलग कर सकता है? नहीं! ये क्लेश हमें परमेश्वर के और नज़दीक लाते हैं; और उनकी सुरक्षात्मक देखभाल के अन्दर, हम विश्राम पाते हैं। परमेश्वर का अनुग्रह ही हमारे लिए बहुत है। परमेश्वर की सामर्थ्य हमारी निर्बलता में सिद्ध होती है। जब हम खुद में कमजोर होते हैं, तभी प्रभु

में बलवन्त होते हैं। परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही त्यागेंगे। R1653,C2,P5 आमीन

1 यूहन्ना 4:12 यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।

जैसे-जैसे हम एक-दूसरे से प्रेम करना सीखते हैं, परमेश्वर का प्रेम, सच्चा, परोपकारी प्रेम, जिसकी प्रभु आज्ञा देते हैं, हममें सिद्ध होता जाता है। प्रभु ने कहा कि, जैसा प्रभु ने हमसे प्रेम किया, वैसा ही हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए - इस हद तक की एक दूसरे के लिए अपना जीवन बलिदान करने लिये तैयार हों। हमें **कुछ** भाइयों से **कुछ समय** के लिये और **कुछ** भाइयों से **सभी समय** प्रेम नहीं करना है, लेकिन हमें **हर समय सभी भाइयों से प्रेम** करना चाहिए; और उनकी कमजोरियों और अपरिपूर्णताओं को अनदेखा कर देना चाहिए, उन्हें उस ऊंचे दृष्टिकोण से देखना चाहिए जिसमें परमेश्वर उन्हें देखते हैं, एक दूसरे को क्षमा करना चाहिए, जैसे परमेश्वर ने, मसीह के लिये, **हमारे** दोषों को नजरंदाज कर दिया। हमें उन लोगों को अवश्य क्षमा करना चाहिए, जो हमारे विरुद्ध अपराध करते हैं, क्योंकि हम आशा करते हैं और भरोसा करते हैं, कि परमेश्वर भी हमारे अपराधों को क्षमा कर देंगे। कोई भी "चुने हुए" समूह का नहीं हो सकता जब तक कि यह प्रेम उसमें सिद्ध न हो। R4849,C2,P5 आमीन

1 यूहन्ना 5:4 वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।

इस संघर्ष (पाप के विरुद्ध) में हमारी सफलता का अंश काफी हद तक हमारे विश्वास की गहराई और महान शिक्षक में हमारे भरोसे पर निर्भर करेगा। अगर हम प्रभु की बुद्धि पर पूरा विश्वास करते हैं, तो हम उनके निर्देशों का बारीकी से पालन करेंगे और पूरी लगन के साथ अपने ह्रदय (मन) को सुरक्षित रखेंगे। आवश्यकता के हर एक समय में प्रभु की बुद्धि और सहायता में विश्वास करना हमारे लिये आवश्यक है, ताकि हम प्रभु के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी हों सकें; और इसीलिए यह लिखा है, "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है"; यानि विश्वास के अभ्यास और आज्ञापालन के द्वारा जो इस विश्वास के अभ्यास से हममें आता है, हम "उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है और हमारे लिये अपने आपको बलिदान किया है, जयवन्त से भी बढ़कर" बनने में सक्षम होते हैं। R2249,C2,P1 आमीन

1 यूहन्ना 5:18 जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

यदि वे अपने ह्रदय और मन को बचाए रखेंगें, तो "वह दुष्ट उन्हें छूने नहीं पायेगा," उनको चोट नहीं पहुँचायेगा, उनकी हानि नहीं करेगा। उस दुष्ट के घेराव इनके लिये परीक्षा का कार्य करेंगें, परमेश्वर की अनुमति से उनके लिये, "बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करते

जाएंगे;" लेकिन वह विरोधी शैतान उनको कोई हानि नहीं पहुँचा पायेगा, क्योंकि वे लोग परमेश्वर के हैं, और परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि, जिन लोगों ने अपने ह्रदय और मन में उनके प्रति पूरा समर्पण किया है, और पूरी तरह से अपना ह्रदय और मन परमेश्वर को दे दिया है, उनके सर्वोत्तम हित की सुरक्षा खुद परमेश्वर करेंगे। R4660,C2,P3 आमीन

प्रकाशितवाक्य 2:10 प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।

अच्छा समर्पण करना ही काफी नहीं है; यह काफी नहीं है कि एक समय के लिए हम एक अच्छा युद्ध लड़ें। नहीं, वास्तव में इतना करना काफी नहीं है! परमेश्वर अपने राज्य में उनको स्वीकार नहीं कर रहे हैं जो एक बार विश्वासी थे। परमेश्वर अपने राज्य में उन लोगों को चाहते हैं, जो कभी विश्वासी थे, जो बाद में भी विश्वासी थे, जो हमेशा विश्वासी बने रहते हैं! परमेश्वर राज्य की श्रेणी में उन लोगों को चाहते हैं, जिनपर वे आंख मूंद कर विश्वास कर सकते हैं, जिन्हें वे सुरक्षित रूप से महिमा, आदर और अमरता प्रदान कर सकते हैं, जिसे देने का वादा उन्होंने अपने विश्वासी लोगों को दिया है। और इससे पहले कि ये लोग इस उच्च इनाम और ऊँचे पद को प्राप्त करें, उन्हें पूरी तरह से परखा जायेगा और उन्हें योग्य साबित होना होगा। R5594,C2,P3 आमीन

प्रकाशितवाक्य 2:11 जो जय पाए, उस को दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी।

मनुष्य का मन इस तरह महिमा की ऊँचाई को समझने के प्रयास में डगमगाता है; फिर भी जिनके मन में प्रभु के प्रति गहरा प्रेम है, वे मसीह की प्रिय दुल्हन होने के निमंत्रण से जुड़े इतने बड़े अनुग्रह की सराहना कर सकते हैं, जिसमें उनके पास प्रभु यीशु की तरह बनने का और उनकी महिमामय उपस्थिति में सदा के रहने का अवसर है। अविश्वसनीय अनुग्रह! और यह आश्चर्य तब बढ़ता जाता है जब हम मसीह के अभी के ऊँचे पद पर ध्यान करते हैं, जिसमें उन्हें वह महिमा दी गई है जो की उस महिमा से भी बहुत बड़ी है, जो प्रभु के पास तब थी जब वे पिता के साथ जगत के बनने से पहले थे - प्रभु यीशु के व्यक्तित्व की यह महिमा कुछ ऐसी है - "वे परमेश्वर पिता की महिमा का प्रकाश, और उनके तत्व की छाप हैं", महिमा का ऐसा बड़ा धन जो की प्रभु यीशु को "सभी वस्तुओं का वारिस" बनाता है, सामर्थ्य से भरी महिमा जिसमें उनको "स्वर्ग और पृथ्वी पर का सारा अधिकार" दिया गया है, एक ऐसा सर्वोच्च पद जिसमें उनका स्थान, परमसामर्थी परमेश्वर पिता जो की पुरे ब्रह्माण्ड के महाराजा हैं, उनके बाद दूसरा स्थान है (1 कुरिन्थियों 15: 27, 28), और चरित्र की ऐसी महिमा जो पवित्र शुद्धता की सभी चमक के साथ चमकती है। R1262,C1,P6 आमीन

प्रकाशितवाक्य 2:17 ... जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूंगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई न जानेगा॥

सफ़ेद पत्थर प्रभु के प्रेम की अनमोल निशानी का चिन्ह है, और पत्थर पर लिखा गया नया नाम दूल्हे के नाम का सुझाव देता है। यह वचन महान राजाओं के राजा के साथ एक विशेष जान - पहचान को दर्शाता है, जो खुद उनके और उस व्यक्ति के बीच में गुप्त होता है। जय पाने वालों को केवल एक समूह - दुल्हन के समूह - के रूप में नहीं पहचानना है -- बल्कि इनमें से एक-एक के पास प्रभु का निजी अनुग्रह होगा। इसके बारे में उस व्यक्ति और राजा को छोड़कर कोई भी नहीं जानेगा। प्रभु और जय पानेवालों के बीच में एक व्यक्तिगत और निजी मित्रता होती है। इनके बारे में यह कहा जा सकता है, कि इनको अभी, इस जीवन में, सफ़ेद पत्थर, एक ख़ास पहचान के चिन्ह के रूप में मिलता है। पुराने ज़माने में राजाओं के समय में जो उनके करीबी मित्र हुआ करते थे, उन्हें राजा से मित्रता होने की पहचान के चिन्ह के रूप में दो टुकड़े में तोड़े गए सफ़ेद पत्थर का एक हिस्सा मिलता था जिसपर राजा का नाम लिखा होता था, और दूसरे हिस्से पर उस व्यक्ति का नाम लिखा होता था, जो कि राजा का घनिष्ट मित्र होता था। इस सफ़ेद पत्थर को दिखाकर वह व्यक्ति कभी भी राजा से कोई भी मदद पा सकता था। अभी के समय में प्रभु के साथ घनिष्ट मित्रता रखनेवाले जयवन्त लोगों को यही सफ़ेद पत्थर एक चिन्ह के रूप में मिलता है। यह चिन्ह पवित्र आत्मा की मुहर है जिसके द्वारा प्रभु जय पाने वालों को पहचानते हैं ... पवित्र आत्मा की पूरी मुहर पहले पुनरुथान में दी जायेगी। तब हमारे पास उस नाम की पूरी जानकारी होगी , जिसके द्वारा प्रभु हमें और हम प्रभु को सदा के लिये जानेंगें। आमीन R5113,c1,p4; c2,p2.

प्रकाशितवाक्य 3.5 जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा, पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।

बाइबल में जीवन की दो पुस्तकों का उल्लेख किया गया है - एक वर्तमान समय से जुड़ी है, और दूसरी हजार साल के युग की है... इस वर्तमान समय में खुलने वाली विशेष जीवन की पुस्तक वह है जिसमें इस सुसमाचार युग के सभी जय पानेवालों के नाम हैं... जय पानेवालों के नाम को इस पुस्तक में लिखने का कार्य इस पुरे वर्तमान सुसमाचार के युग में चल रहा है। इसका मतलब यह है कि जिनके नाम लिखे गए हैं वे न केवल परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं, बल्कि दुल्हन श्रेणी के भी सदस्य हैं। इस स्थिति को बनाए रखने के लिए, उन्हें जयवंत होना आवश्यक है... इस वचन में हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि बड़ी भीड़ शामिल है या नहीं। एक दृष्टिकोण से ऐसा लगता है की जैसे वे शामिल हैं; दूसरे से, जैसे कि वे नहीं हो सकते हैं। हम अपने मन में इसे निश्चित रूप से नहीं सुलझाते हैं, लेकिन यह देखने के लिए इंतजार करते हैं कि प्रभु की मंशा क्या है। R5377,C1,P8; C2,P2,3 आमीन

प्रकाशितवाक्य 3.10 तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है।

"मेरे धीरज के वचन," -- या, धीरज जो मेरे वचन मन में देते हैं... ये धीरज शब्द, एक ऐसा विचार देता है कि, हम बुराई को ख़ुशी से, इच्छुक होकर, और धीरज के साथ सह सकें ... ह्रदय और चरित्र की ऐसी बढ़ोतरी जो स्वयं को दिव्य ज्ञान और प्रेम में पूर्ण परिचितता के साथ, इच्छा की

बगावत के बिना, संतोष के साथ गलत या पीड़ा को धीरज से सहकर प्रकट करती है। अगर कभी धीरज रखना जरूरी था तो अब जरूरी है; अगर कभी यह सच था, "अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे," तो ऐसा अब है। जो लोग परमेश्वर के ग्रहणयोग्य होकर दौड़ रहे हैं, और इस धीरज से सहने के चरित्र को रखते हैं, वे ही "बुरे दिन का सामना" कर सकेंगे, और दूसरे कोई भी लोग खड़े होने में सक्षम नहीं होंगे। R2790,C2,P6; R2792,C1,P6; C2,P1 आमीन

प्रकाशितवाक्य 3.12 जो जय पाए, उस मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊंगा; और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा।

परमेश्वर अपने लोगों - उनकी कलीसिया - दुल्हन, मेमने की पत्नी - के लिए एक नये नाम का प्रस्ताव रखते हैं। जैसा कि यीशु हमारे प्रभु का नाम था और वह मसीह, मसीहा बन गये, इसलिए वे सभी जो प्रभु यीशु की देह के सदस्य बनेंगे, वे प्रभु यीशु के नए नाम के अन्तर्गत आयेंगे, और मसीह के सदस्य के रूप में एक दूसरे को पहचानेंगे और प्रभु के द्वारा मसीह के सदस्य के रूप में पहचाने जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 3.12); और फिर से, प्रभु, मसीह के बारे में भविष्यद्वाणी करते हुए, कहते हैं, "यहोवा उसका नाम, यहोवा की धामिर्कता रखेंगे" (यिर्मयाह 23:6): और फिर से, मसीह की दुल्हन के बारे कहते हैं, "उसका नाम यह रखा जाएगा,

यहोवा की धामिर्कता (यिर्मयाह 33:16)। दूल्हे का नाम उनकी दुल्हन को दिया गया है - "जो दिन मैं ने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन मेरे निज भाग (गहने) ठहरेंगे।" और जिन लोगों को यह नया नाम मिलेगा, हमें यकीन है, उन सभी को यह प्रदर्शित करने के लिए बुलाया जाएगा कि वे जयवंत होंगें। R3970,C2,P3 आमीन

प्रकाशितवाक्य 3.20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।

इस वादे की आशीष उन लोगों के लिये विशेष इनाम है, जो वर्तमान समय में, लौदीकिया काल में धीरज के साथ सहते हुए दौड़ रहे हैं; यद्यपि इस परीक्षा के घंटे से बचना हमारा विशेषाधिकार नहीं था, फिर भी हमारे प्रभु की उपस्थिति के समय में रहने के परिणामस्वरूप, परीक्षाओं के बराबर एक विशेष आशीष पाना हमारा विशेषाधिकार है। हमारे पास प्रभु की संगति, उनके निर्देश, हो सकते हैं, हम उनके द्वारा आत्मिक भोजन इस तरह से और इस हद तक पाते हैं जो की "उचित समय का आहार" है, जिसका आनन्द पिछली अवधि के किसी भी वफादार चेलों ने नहीं लिया था। लेकिन जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं, इस सबसे बड़े अनुग्रह से भरी आशीष को, सारे संसार पर आनेवाली परीक्षाओं की जटिलता और गंभीरता परिणामस्वरूप संतुलित कर देती है। R2792,C1,P6 आमीन

प्रकाशितवाक्य 3.21 जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पा कर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।

हमारे पास इस कटनी के समय के भीतर विरोध के बहुत से दुःखदायक तूफान थे; और निःसन्देह अभी भी और अधिक दुःखदायक परीक्षाओं को इनके बाद आना है। लेकिन जो लोग, जयवंत विश्वास के साथ, इन सभी दुखों को पीछे छोड़ देते हैं - जो धैर्यपूर्वक सहन करते हैं, जो मसीह की आत्मा को इसके फलों और अनुग्रहों के साथ उगाते हैं, और जो मैदान से पीछे हटने के बजाय विश्वास की अच्छी कुश्ती वीरतापूर्वक लड़ते हैं - ऐसे लोग "जयवंत" होंगे जिनको जब मुकुट पहनाने का दिन आयेगा, तब विजय की लूट दी जाएगी। R1656,C2,P3 आमीन